राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शनिवार , 11 अप्रैल 2026

वर्ष 14,अंक 350, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

पत्रकार एकजुटता और जनहित के मुद्दों पर निगोहां प्रेस क्लब की मासिक बैठक संपन्न..03

संतोष नगर विवाद में बड़ा एक्शन- प्रशासन का कड़ा संदेश, लोगों में जश्न का माहौल!..04

पवन खेड़ा जेल जाने से बचे, अभिषेक मनु सिंघवी ने दी ऐसी दलील, झट से मान गई H C जज

असम के मुख्यमंत्री की पत्नी के 'पासपोर्ट' वाले विवाद में कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को बड़ी राहत मिली है. तेलंगाना हाईकोर्ट ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की पत्नी की ओर से दर्ज कराई गई एफआईआर के मामले में एक हफ्ते की अग्रिम जमानत दी है. पवन खेड़ा की ओर से अभिषेक मनु सिंघवी ने दलील दी थी. आदेश सुनाते हुए जस्टिस के सुजना ने कहा, 'याचिकाकर्ता को संबंधित अदालत में आवेदन दाखिल करने के लिए एक हफ्ते का समय दिया जाता है, याचिकाकर्ता को एक हफ्ते के लिए शर्तों के साथ राहत दी जाती है.' दरअसल, अग्रिम जमानत की याचिका तेलंगाना के हैदराबाद में दाखिल की गई थी, जहां पवन खेड़ा का निवास है. इससे पहले तेलंगाना हाई कोर्ट ने गुरुवार को कांग्रेस नेता पवन खेड़ा की उस याचिका पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया था. इसमें उन्होंने असम पुलिस द्वारा उनके खिलाफ दर्ज मामले में गिरफ्तारी से अंतरिम सुरक्षा की मांग की थी. यह मामला मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा की पत्नी रिंकी भुइयां सरमा के खिलाफ कथित तौर पर मानहानिकारक और दुर्भावनापूर्ण आरोप लगाने के लिए दर्ज किया गया था।

पवन खेड़ा ने असम की अदालतों में जाने के लिए ट्रांजिट अग्रिम जमानत मांगी थी. जस्टिस के सुजाना ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रखा था. आज इस पर फैसला सुनाया गया. पवन खेड़ा की ओर से पेश वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने अदालत में दलील दी कि असम पुलिस द्वारा दर्ज एफआईआर में राजनीतिक बदले की बू आती है. असम पुलिस की ओर से पेश होते हुए असम के एडवोकेट जनरल देवजीत सैकिया ने हैदराबाद में अग्रिम जमानत याचिका की स्वीकार्यता को चुनौती दी थी. उन्होंने दलील दी कि दिल्ली के निवासी खेड़ा ने ऐसा कोई कारण नहीं बताया है कि वे असम में याचिका क्यों दायर नहीं कर सकते।

पवन खेड़ा के खिलाफ कौन-कौन से केस दर्ज

असम पुलिस ने पवन खेड़ा के खिलाफ मानहानि, जालसाजी और आपराधिक साजिश के कथित मामले में केस दर्ज किया है. उनके खिलाफ यह केस तब दर्ज किया गया, जब उन्होंने दावा किया कि रिंकी भुइयां के पास कई विदेशी पासपोर्ट और विदेशों में अघोषित संपत्तियां हैं।

दिल्ली पहुंची थी असम पुलिस

असम पुलिस की एक टीम ने मंगलवार को दिल्ली स्थित पवन खेड़ा के घर पहुंची थी. हालांकि, उस वक्त खेड़ा वहां मौजूद नहीं थे. पुलिस ने पवन खेड़ा के घर के बाहर बैरिकेड लगाए और हैदराबाद में उनकी पत्नी नीलिमा के घर के बाहर भी सुरक्षा तैनात की. मुख्यमंत्री सरमा की पत्नी पर सनसनीखेज आरोप लगाने के बाद से ही यह कांग्रेस नेता असम पुलिस की नजर में हैं. उन पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की 14 धाराओं के तहत केस भी दर्ज किया गया है, जिनमें मानहानि, जालसाजी और आपराधिक साजिश शामिल हैं।

कब शुरू हुआ विवाद

यह विवाद रविवार को पवन खेड़ा की प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद शुरू हुआ, जिसमें उन्होंने दावा किया कि रिंकी भुइयां सरमा के पास तीन पासपोर्ट, दुबई में अघोषित आलीशान संपत्तियां हैं और अमेरिका में शेल कंपनियां भी हैं. प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद से पवन खेड़ा लापता हैं. बुधवार को उन्होंने मांग की कि मुख्यमंत्री अपनी ताकत दिखाने और पुलिस के पीछे छिपने के बजाय अपने और अपनी पत्नी पर लगे गंभीर आरोपों का जवाब दें. एक वीडियो बयान में उन्होंने कहा कि वह ऐसी चालों से डरने वाले नहीं हैं और सवाल पूछते रहेंगे. कांग्रेस ने अपने एक्स अकाउंट पर पवन खेड़ा का वीडियो बयान शेयर किया, जो कथित तौर पर किसी अज्ञात जगह से रिकॉर्ड किया गया था. इस वीडियो में वह असम के मुख्यमंत्री से कहते हैं, 'गंभीर आरोपों पर सफाई देने के बजाय, आपने अपनी पुलिस को पीछे लगा दिया है. लेकिन, हम, राहुल गांधी के सिपाही, डरने वाले नहीं हैं।'

मथुराः वृंदावन में यमुना में पलटा स्टीमर, 10 लोगों की मौत; 15 को बचाया गया... कई अभी भी लापता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मथुरा जिले के वृंदावन में शुक्रवार को बड़ा हादसा हुआ. यहां श्रृंगार घाट के पास एक स्टीमर पलटने से कई श्रद्धालु लापता हो गए. स्टीमर पर करीब 33 श्रद्धालु सवार थे, जिनमें से 10 की डूबने से मौत हो गई, जबकि 15 लोगों को सुरक्षित बचा लिया गया. वहीं आठ लोग अभी भी लापता हैं. मौके पर पुलिस और गोताखोरों की टीम रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटी है. ये सभी श्रद्धालु पंजाब के लुधियाना से बांके बिहारी के दर्शन करने आए थे. बता दें कि रेस्क्यू टीम ने अभी तक यमुना नदी से 25 लोगों को बाहर निकाला है. इनमें से 15 की हालत तो ठीक है, लेकिन 10 लोगों की मौत हो गई. बचाए गए 15 लोगों में जिनकी हालत थोड़ा गंभीर हैं, उन्हें एंबुलेंस की मदद से अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज चल रहा है. वहीं अन्य बचे आठ लोगों की तलाश जारी है. स्थानीय लोगों के मुताबिक, रेस्क्यू टीम द्वारा यमुना नदी से 10 लोगों के शव निकाले गए हैं।

CM योगी ने हादसे का संज्ञान लिया

श्रृंगार घाट मौके पर भारी संख्या में लोग मौजूद हैं. लोगों की भीड़ को देखते हुए पुलिस बल को भी तैनात किया गया है. वहीं घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस-प्रशासन के आला अधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंचना शुरू हो गए हैं. स्टीमर हादसे का ष्टरूयोगी ने भी संज्ञान लिया. ष्टरूयोगी ने अधिकारियों को मौके पर पहुंचने के निर्देश दिए. उन्होंने मृतकों के परिजनों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की. साथ ही राहत-बचाव कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए।

मथुरा DM ने दी हादसे की जानकारी

जिलाधिकारी चंद्र प्रताप सिंह ने हादसे की जानकारी देते हुए बताया कि हादसे में अभी तक 10 लोगों की हुई मौत. 15 लोगों को बचा लिया गया है. अन्य लोगों की तलाश में रेस्क्यू टीमें जुटी हैं. जिलाधिकारी ने बताया कि शुक्रवार को 32 श्रद्धालु लुधियाना से वृंदावन बांके बिहारी के दर्शन करने आए थे. दर्शन के बाद सभी स्टीमर पर बैठकर यमुना में सैर कर रहे थे. अचानक से श्रृंगार घाट के पास इनका स्टीमर नदी में पलट गया. वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी मथुरा नाव हादसे पर दुख जताया. पीएम मोदी ने 'X' पर ट्वीट कर लिखा, 'उत्तर प्रदेश के मथुरा में नाव पलटने से हुई दुर्घटना से मैं अत्यंत दुखी हूं. जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं. मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं. स्थानीय प्रशासन प्रभावित लोगों की सहायता कर रहा है।

NDRF और SDRF को भी बुलाया गया

स्थानीय लोगों ने बताया कि हादसा शुक्रवार दोपहर के समय श्रृंगार घाट पर हुआ. पंजाब के श्रद्धालुओं से भरा एक स्टीमर पांटून पुल से टकराकर पलट गया. हादसा होते देख घाट पर स्नान कर लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी. सूचना मिलते ही पुलिस और गोताखोरों की टीम मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू किया. रेस्क्यू ऑपरेशन में NDRF ओर SDRF की भी मदद ली जा रही है।

संक्षिप्त ख़बरें

खेतों में जाने से क्यों डर रहे हैं लखनऊ के किसान? फसल छोड़कर भागने को मजबूर

मलिहाबाद (लखनऊ)। रहीमाबाद क्षेत्र के गांवों में इन दिनों मधुमक्खियों का जबरदस्त कहर देखने को मिल रहा है। आलम यह है कि मधुमक्खियों के हमले के डर से किसानों ने अपने खेतों की ओर जाना बंद कर दिया है। फसल कटाई का समय होने के बावजूद किसान अपनी मेहनत को सुरक्षित घर लाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। रहीमाबाद थाना क्षेत्र के गढ़ी जिंदौर के मजरा गदिया खेड़ा गांव में कल्लू नामक किसान के खेत में स्थित गूलर के पेड़ और ट्यूबवेल पर मधुमक्खियों के बड़े-बड़े छत्ते लगे हुए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि इन छत्तों की वजह से गदिया खेड़ा और रामनगर के किसान बेहद डरे हुए हैं।

ग्रामीणों ने बताया कि छत्तों के आक्रामक होने का मुख्य कारण पक्षी हैं।आए दिन शहद खाने के लालच में पक्षी छत्तों पर चोंच मार देते हैं।पक्षियों के प्रहार से छत्ता अस्त-व्यस्त हो जाता है जिससे मधुमक्खियां भड़क उठती हैं और आसपास मौजूद इंसानों को अपना निशाना बनाने लगती हैं। बीते कुछ दिनों में फसल काटने की कोशिश करने वाले लगभग एक दर्जन किसानों को मधुमक्खियों ने काटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया है। स्थिति इतनी गंभीर है कि अब शहद निकालने वाले पेशेवर लोग भी इन छत्तों को हाथ लगाने से कतरा रहे हैं। ग्रामीण रामप्रसाद, सुरेश, डल्ला, रामकिशोर ने बताया खेतों में फसल तैयार खड़ी है लेकिन जान जोखिम में डालकर कोई वहां जाने को तैयार नहीं है। जो भी उधर कदम बढ़ाता है मधुमक्खियों का झुंड उस पर टूट पड़ता है। फिलहाल किसान इस समस्या से निजात पाने के लिए परेशान हैं और प्रशासन से मदद की उम्मीद लगाए बैठे हैं ताकि वे सुरक्षित अपनी फसल की कटाई कर सकें।

'ऐसी भाषा याचिका में कहां से लिखते हो?' जाति आधारित जनगणना रोकने की PIL खारिज, CJI ने लगाई फटकार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट ने जाति आधारित जनगणना रोकने की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया है. बताया जा रहा है कि शुक्रवार को S C में सुनवाई के दौरान केंद्र को जाति आधारित जनगणना रोकने का निर्देश देने का अनुरोध करने वाली याचिका कर दिया गया है. इस दौरान सुप्रीम कोर्ट ने जनहित याचिका में इस्तेमाल की गई भाषा को लेकर याचिकाकर्ता को फटकार भी लगाई. प्रधान न्यायाधीश (CJI)सूर्यकांत सुनवाई के दौरान व्यक्तिगत रूप से पेश हुए याचिकाकर्ता से स्पष्ट रूप से नाराज दिखे. उन्होंने कहा, आपने अपनी याचिका में बदतमीजी की भाषा लिखी है. आपने किससे अपनी याचिका लिखवाई है. प्रधान न्यायाधीश ने याचिकाकर्ता से कहा, आप कहां से ऐसी भाषा लिखते हो याचिका में. बताया जा रहा है कि प्रधान न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली इस पीठ में न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली भी शामिल थे. पीठ ने इस याचिका को खारिज कर दिया. याचिका में केंद्र को एकल संतान वाले परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन देने के लिए नीतियां बनाने का निर्देश दिए जाने का भी अनुरोध किया गया है।

देश की पहली पूर्ण डिजिटल जनगणना होगी

सुप्रीम कोर्ट ने इससे पहले दो फरवरी को भी एक अन्य जनहित याचिका पर भी विचार करने से इनकार कर दिया था जिसमें 2027 की आम जनगणना में नागरिकों के जाति संबंधी आंकड़ों को दर्ज करने, वर्गीकृत करने और सत्यापित करने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया पर सवाल उठाए गए थे. आधिकारिक तौर पर देश की 16वीं राष्ट्रीय जनगणना- 2027 की जनगणना, 1931 के बाद पहली ऐसी जनगणना होगी जिसमें जाति के आधारित पर व्यापक गणना शामिल होगी और यह देश की पहली पूर्ण डिजिटल जनगणना भी होगी।

अगर कुछ नहीं होता, तब आप कोर्ट आएंगे

CJI ने याचिकाकर्ता को फटकार लगाने के बाद बताया कि कोर्ट ने भागने के जाए आपको अधिकारियों संपर्क करना चाहिए. उन्हें कुछ मुद्दों पर समझदार बनना चाहिए. CJI ने आगे कहा कि लेकिन हम उम्मीद करते हैं कि बार के एक मेंबर के रूप में और आपके जैसे कानून की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को मुद्दे को विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से पहचानना चाहिए और तब अधिकारियों को जागरूक करने की कोशिश करनी चाहिए और अगर कुछ नहीं होता, तब आप कोर्ट आएंगे।'

बिना मर्जी के हम यहां युद्ध लड़ रहे, सुप्रीम कोर्ट ने रूस में फंसे 26 भारतीयों की याचिका पर केंद्र को भेजा नोटिस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट ने रूस में फंसे भारतीयों के मामले में दायर 26 रिट याचिकाओं पर सरकार से जवाब तलब किया है. विदेश मंत्रालय समेत सभी राज्य सरकारों को सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस जारी किया है. इसके जवाब तलब के लिए चार सप्ताह का समय दिया गया है. ये सभी भारतीय छात्र या पर्यटक वीजा पर रूस गए थे. याचिका में उन भारतीय नागरिकों के कथित प्रत्यर्पण के खिलाफ कार्रवाई की मांग की गई है, जो छात्र या पर्यटक वीजा पर रूस गए थे और अब कथित तौर पर यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में भाग लेने के लिए मजबूर किए जा रहे हैं. याचिका में प्रभावित लोगों के परिवारों की तरफ से प्रस्तुत रिप्रेजेंटेशन पर विदेश मंत्रालय की निष्क्रियता को भी उजागर किया गया है. रूस से 26 भारतीयों की सुरक्षित वापसी की मांग की गई है. मांग को लेकर दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर नोटिस जारी किया गया है. सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस भेजा है।

'हम अपनी इच्छा के बिना युद्ध लड़ रहे'

याचिककर्ता के वकील ने कहा कि राज्य की ओर से लगातार और निरंतर निष्क्रियता बनी हुई है. याचिका में बताया गया कि हम रूस में फंसे हुए हैं, हम अपनी इच्छा के खिलाफ एक विदेशी राज्य के लिए यूक्रेन के खिलाफ युद्ध लड़ रहे हैं. सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि हम इस मामले की जांच करेंगे. सुप्रीम कोर्ट ने आदेश में कहा कि सॉलिसिटर जनरल ने निर्देश लेने के लिए समय मांगा है. एक हफ्ते के भीतर जवाब देने योग्य नोटिस जारी किया जाए. याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि हम या तो मर चुके हैं या घायल हैं हम बेहद मुश्किल स्थिति में हैं. CJI ने कहा कि हमने सॉलिसिटर जनरल से इस मामले को देखने का अनुरोध किया है. याचिका में कहा गया है कि परिवारों को मिले आखिरी मैसेज सितंबर और अक्टूबर 2025 के बीच मिले थे. यहां पता चलता है कि वो लोग कुपियांस्क, सेलिदोवे, माकीवका और चेल्याबिंस्क जैसे सक्रिय संघर्ष क्षेत्रों में या उनके आस-पास तैनात थे. उन्होंने अपनी सुरक्षा को लेकर डर जाहिर किया था और बताया था कि वे उन इलाकों से निकल पाने में असमर्थ हैं।

यूपी में दो किसानों ने की आत्महत्या, स्वजन का दावा- फसल बर्बाद होने से थे परेशान

●- उरई में पत्नी के नाम पर 15 बीघा खेती में नुकसान के बाद खा ली चूहा मार दवा - ढाई बीघा फसल चौपट होने, बैंक कर्ज के कारण तनाव में हमीरपुर में लगाया फंदा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

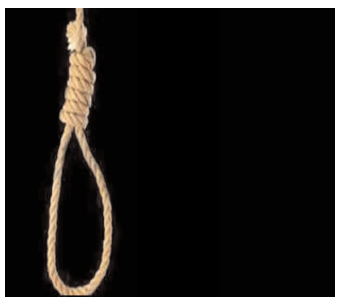

कानपुर। ओलावृष्टि, वर्षा व आंधी के कारण गेहूं की फसल बर्बाद होने से क्षुब्ध होकर उरई व हमीरपुर में दो किसानों ने जान दे दी। दोनों के स्वजन ने बताया कि फसल का बीमा भी नहीं कराया था। वहीं, प्रशासनिक अधिकारियों का कहना है कि आत्महत्या का कारण फसल में नुकसान नहीं, कुछ और हो सकता है। जांच कराई जा रही है। उरई के मुहल्ला इंदिरा नगर निवासी 50 वर्षीय किसान लखन सिंह राजपूत की हमीरपुर के थाना जलालपुर के ग्राम लोधीपुरा में 15 बीघा जमीन थी, जो उनकी पत्नी ममता के नाम है। लखन ने खेत में गेहूं की फसल बोई थी। स्वजन ने बताया कि चार दिन पहले ओलावृष्टि व बारिश से पूरी फसल बर्बाद हो गई। तीन दिन पहले वह गांव से लौटे तो गुमसुम थे। पत्नी व पड़ोसियों के कारण पूछने पर कहा कि सबकुछ बर्बाद हो गया। बुधवार को उनकी पुत्री रिंकी घर आई तो शाम को नाती अंश को बाजार घुमाने ले गए और वहीं चूहा मार दवा खरीदकर खा ली।

घर आने पर वह अचेत हो गए तो आसपास के लोग उन्हें इलाज के लिए मेडिकल कालेज ले गए, जहां जेब से चूहा मार दवा का खुला पैकेट मिला। इलाज के दौरान देर रात उनकी मौत हो गई। हमीरपुर के सरीला तहसील के एसडीएम बलराम गुप्ता ने बताया कि लोधीपुरा ओलावृष्टि से प्रभावित क्षेत्र में नहीं है, आंशिक नुकसान संभव है। इसी तरह, हमीरपुर के मुस्करा थानाक्षेत्र के पहाड़ी गांव निवासी सुघर सिंह ने बताया कि उनके 45 वर्षीय भाई चंद्रशेखर के पास करीब ढाई बीघा अपनी व कुछ बलकट पर जमीन थी। इस बार उन्हें अच्छी पैदावार की आस थी, लेकिन लगातार बारिश ने उनकी गेहूं की फसल पूरी तरह चौपट कर दी। उन्होंने बताया कि चंद्रशेखर पर बैंक के किसान क्रेडिट कार्ड का करीब 50 हजार व साहूकारों का लगभग 50 हजार रुपये का कर्ज था। उनकी 22 वर्षीय बेटी कोमल की शादी मई में होनी है। कर्ज व बेटी की शादी की चिंता के साथ फसल बर्बादी से तनाव में थे। बुधवार रात करीब साढ़े आठ बजे वह कमरे के अंदर गए और फंदा लगाकर जान दे दी। थाना प्रभारी योगेंद्र सिंह ने बताया कि प्रथमदृष्टया तनाव के कारण आत्महत्या करने की बात सामने आई है। एसडीएम मौदहा करनवीर सिंह ने बताया कि किसान की फसल छह से सात दिन पहले ही कटकर घर आ चुकी थी। फसल बर्बादी नहीं, आत्महत्या का दूसरा कारण हो सकता है।

कबाड़ हो चुके मोबाइल पर टिका साइबर ठगी का धंधा, टब-कुर्सी का लालच देकर ले रहे 'हथियार'

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कानपुर। छोटे मोबाइल के बदले छोटा टब, बड़े मोबाइल के बदले बड़ा टब... अगर आपकी गली में भी ऐसे ही फेरी लगाने वाले आते हैं त तो सावधान हो जाइए। कबाड़ हो चुके फोन के बदले टब और कुर्सी मिलने का लालच साइबर ठगी के धंधे की अहम हथियार तैयार कर रहा है। दरअसल, खराब हो चुके इन मोबाइल के सही पार्ट्स निकालकर एक कस्टमाइज फोन तैयार किया जाता है, इसे ही साइबर ठगी की घटनाओं को अंजाम देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। नया जामताड़ा बने घाटमपुर के रेउना में पुलिस ने दबिश देकर 20 साइबर अपराधियों सले 17 एंड्राइड फोन और चार की-पैड फोन बरामद किए हैं। इन्हें ऐसे ही खराब हो चुके मोबाइल फोन के सही पार्ट्स मिलाकर तैयार किया गया था, जिसके चलते मोबाइल का मालिक कौन है इसको लेकर भी असमंजस की स्थिति बनी रहती थी। इनमें एंड्राइड फोन का इस्तेमाल वीडियो काल के जरिये साइबर ठगी और डिजिटल अरेस्ट जैसी घटनाओं को अंजाम देने के लिए किया जाता था, जबकि की-पैड फोन का इस्तेमाल काल के जरिये ठगी की घटनाओं को अंजाम देने के लिए किया जाता था।

ऐसे पहुंचते हैं ठगों तक मोबाइल

फेरी वाले आपको घरों से कबाड़ हो चुके मोबाइल फोन ले जाते हैं। इसके बाद इन्हें शहर में एक खास वेंडर को बेचते हैं जो इनमें मौजूद सही पार्ट्स को निकाल लेता है। इसके बाद इन सही पार्ट्स के संयोजन से एक कस्टमाइज फोन तैयार किया जाता है। इसके बाद वेंडर के एजेंट साइबर ठगों से संपर्क करते हैं और पांच हजार रुपये से लेकर पचास हजार रुपये तक में इन्हें बेच देते हैं।

पुराने डाटा का भी करते हैं इस्तेमाल

कबाड़ हो चुके मोबाइल की मेमोरी में लोगों का डाटा सुरक्षित रहता है। कस्टमाइज मोबाइल तैयार करने वाला वेंडर इन डाटा को भी सुरक्षित तरीके से रिकवर कर लेता है और साइबर ठगों को मुंह मांगी कीमत पर बेचता है। साइबर ठग इन फोनों पर रिकवरी होने वाले नंबरों और डाटा को भी साइबर ठगी के लिए इस्तेमाल करते हैं।

मोबाइल के कोडवर्ड से तय होती थी गैंग में रैंक

मोबाइल के फीचर यह बताते थे कि साइबर ठग कितना बड़ा जालसाज है और ये साइबर ठगी की किन-किन वारदातों को अंजाम दे सकता है। मसलन, काल पर साइबर ठगी करने का काम गैंगे में शामिल हुए प्रशिक्षुओं को दिया जाता था। इस काम के लिए उन्हें की-पैड वाला फोन मिलता था जो उनकी कोडवर्ड होता था। कुछ दिन ठगी के प्रशिक्षण के बाद इन्हें थोड़ी उच्च क्वालिटी का एंड्राइड फोन दिया जाता था। इसके जरिये वे पीड़ित के पोन पर लिंक भेजकर एनीडेस्क जैसे साफ्टवेयर डाउनलोड ओटीपी आदि की चोरी कर ठगी की वारदातों को अंजाम देते हैं। वहीं, वीडियो काल पर ठगी और डिजिटल अरेस्ट करने वालों की गैंग में सबसे ऊंची रैंक होती है। इनके पास फ्लैगशिप फोन (सबसे उच्च क्वालिटी और उन्नत तकनीकी वाले स्मार्ट फोन) होते हैं। ये साइबर ठगी को वारदातों को अंजाम देने के साथ गैंग में भर्ती होने वाले को अपराध करने के तरीकों का प्रशिक्षण भी देते हैं।

मोबाइल फोन या स्मार्ट डिवाइस बेचने से पहले इन बातों का रखें ध्यान

मोबाइल फोन या स्मार्ट डिवाइस को फारमेट कर दें।

अपनी ई-मेल आइडी से लेकर सभी जरूरी खातों से लागआउट कर लें

फोटो और बैंक खाते के बैकअप को पूरी तरह डिलीट कर दें

फोन इनक्रिप्टेड है या नहीं, अगर नहीं तो मैन्युअली इसे कर लें

अगर माइक्रो एसडी (मेमोरी कार्ड) लगा है तो इसे हटा लें।

युद्ध के मुहाने से लौटी दुनिया

दुनिया कभी-कभी ऐसे मोड़ों पर आ खड़ी होती है, जहाँ एक निर्णय पूरी सभ्यता के भविष्य को बदल सकता है। हाल के घटनाक्रम में यही स्थिति तब बनी जब अमेरिका और ईरान के बीच तनाव अपने चरम पर पहुँच गया। वातावरण इतना तनावपूर्ण था कि किसी भी क्षण युद्ध का विस्तार एक बड़े विनाश में बदल सकता था। अमेरिका की सेना और उसके रक्षा तंत्र पूरी तरह तैयार थे और संकेत का इंतजार कर रहे थे कि कब हमला शुरू किया जाए। दूसरी ओर ईरान भी अपनी रक्षा और जवाबी कार्रवाई के लिए तैयार बैठा था। यह केवल दो देशों का संघर्ष नहीं रह गया था, बल्कि पूरे क्षेत्र और विश्व व्यवस्था के लिए एक गंभीर संकट बन चुका था। स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अमेरिका ने ईरान को कड़ा संदेश देते हुए बड़े पैमाने पर हमले की चेतावनी दे दी थी। यदि यह हमला होता, तो ईरान के बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुँच सकता था। इसके परिणामस्वरूप ईरान की ओर से भी तीखी प्रतिक्रिया आती, जो पूरे मध्यपूर्व को युद्ध की आग में झोंक सकती थी। इस पूरे घटनाक्रम में आम लोगों की स्थिति सबसे अधिक भयावह थी। ईरान के भीतर लोग अपने घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों की तलाश में निकलने लगे थे, जबकि खाड़ी क्षेत्र के देश भी संभावित हमलों से बचने की तैयारी कर रहे थे।

इसी बीच कूटनीतिक प्रयास भी तेजी से चल रहे थे। कई देशों ने इस संकट को टालने के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाई। इन प्रयासों का उद्देश्य था कि किसी तरह दोनों पक्षों के बीच बातचीत जारी रहे और युद्ध टल सके। ईरान की ओर से एक प्रस्ताव सामने आया, जिसमें कई शर्तें रखी गई थीं। शुरू में इस प्रस्ताव को स्वीकार्य नहीं माना गया, लेकिन बातचीत की प्रक्रिया जारी रही। धीरे-धीरे यह स्पष्ट होने लगा कि दोनों पक्ष युद्ध से बचना चाहते हैं, भले ही सार्वजनिक रूप से वे कठोर रुख अपनाए हुए हों।

इस पूरे घटनाक्रम की सबसे दिलचस्प बात यह रही कि निर्णय लेने की प्रक्रिया बेहद अनिश्चित और उलझी हुई थी। अमेरिका के भीतर भी यह स्पष्ट नहीं था कि अंतिम निर्णय क्या होगा। स्वयं उसके नेतृत्व के करीबी लोगों को भी यह अंदाजा नहीं था कि अगला कदम क्या होगा। एक ओर कठोर बयान दिए जा रहे थे, तो दूसरी ओर बातचीत के रास्ते खुले रखे जा रहे थे। यह द्वंद्व इस बात को दर्शाता है कि आधुनिक राजनीति में शक्ति और कूटनीति दोनों साथ-साथ चलते हैं।

ईरान के भीतर भी निर्णय लेने की प्रक्रिया जटिल थी। वहाँ की सत्ता संरचना में अंतिम निर्णय शीर्ष नेतृत्व के हाथ में होता है। इस कारण अंतिम सहमति मिलने में समय लगा। लेकिन जब अंततः समझौते की दिशा में आगे बढ़ने का संकेत मिला, तो बातचीत ने तेजी पकड़ ली। बताया जाता है कि यह निर्णय आसान नहीं था, क्योंकि इसमें सैन्य नेतृत्व और अन्य शक्तिशाली संस्थाओं को भी सहमत करना पड़ा। इसके बावजूद यह कदम उठाया गया, जो इस बात का संकेत है कि युद्ध की कीमत दोनों पक्ष समझ रहे थे।

अंततः जो समझौता सामने आया, वह स्थायी शांति नहीं बल्कि अस्थायी विराम था। दोनों पक्षों ने कुछ समय के लिए संघर्ष रोकने पर सहमति जताई। इस समझौते के तहत समुद्री मार्ग को फिर से खोलने और आगे की बातचीत जारी रखने का रास्ता बनाया गया। यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि इस मार्ग से विश्व का बड़ा हिस्सा तेल आपूर्ति पर निर्भर करता है। यदि यह बंद रहता, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गंभीर असर पड़ता।

हालाँकि यह समझौता होने के बाद भी स्थिति पूरी तरह शांत नहीं हुई। कई जगहों पर संघर्ष जारी रहने की खबरें सामने आई और इस बात को लेकर भी मतभेद रहे कि समझौते की शर्तें क्या हैं और उनका पालन कैसे किया जाएगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह केवल एक अस्थायी राहत है, न कि स्थायी समाधान। दोनों पक्षों के बीच कई ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर अभी भी गहरे मतभेद हैं, जैसे परमाणु कार्यक्रम, प्रतिबंध और क्षेत्रीय प्रभाव। इस पूरे घटनाक्रम से एक महत्वपूर्ण बात सामने आती है कि आधुनिक युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि कूटनीति से भी लड़े जाते हैं। कई बार पर्दे के पीछे होने वाली बातचीत ही युद्ध को टाल देती है। इस मामले में भी अंतिम क्षणों में हुई बातचीत ने एक बड़े विनाश को रोक दिया। यदि यह बातचीत विफल हो जाती, तो परिणाम बेहद भयावह हो सकते थे।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस संकट में कई देशों ने सक्रिय भूमिका निभाई। यह दर्शाता है कि आज की दुनिया में कोई भी बड़ा संघर्ष केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहता। उसका प्रभाव वैश्विक होता है और उसे सुलझाने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक होता है। इसी सहयोग ने इस बार भी युद्ध को टालने में मदद की।

फिर भी यह सवाल बना हुआ है कि क्या यह शांति स्थायी होगी। इतिहास बताता है कि अस्थायी समझौते अक्सर स्थायी समाधान में बदलने में सफल नहीं होते। जब तक मूल कारणों का समाधान नहीं होता, तब तक संघर्ष की संभावना बनी रहती है। इस मामले में भी कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनका समाधान अभी बाकी है। यदि इन पर सहमति नहीं बनती, तो भविष्य में फिर से तनाव बढ़ सकता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि यह घटना केवल एक राजनीतिक या सैन्य घटनाक्रम नहीं है, बल्कि यह मानवता के लिए एक चेतावनी भी है। यह दिखाती है कि दुनिया कितनी तेजी से विनाश के करीब पहुँच सकती है और किस तरह अंतिम क्षणों में लिया गया एक निर्णय सब कुछ बदल सकता है। यह भी स्पष्ट होता है कि शांति केवल शक्ति से नहीं, बल्कि संवाद और समझ से संभव है। इस पूरे घटनाक्रम ने यह साबित कर दिया कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी गंभीर क्यों न हों, यदि बातचीत के रास्ते खुले रहें तो विनाश को टाला जा सकता है। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि दोनों पक्ष अपने मतभेदों को समझदारी से सुलझाने की इच्छा रखें। यही इस घटना का सबसे बड़ा संदेश है।

महेन्द्र तिवारी

संयम का कवच और क्रोध पर विजय का मार्ग

मनुष्य के जीवन में संयम का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह केवल एक नैतिक गुण नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाला आधार स्तंभ है। यदि व्यक्ति हर परिस्थिति में स्वयं को संयमित रख सकता है, तो वह वास्तव में शिक्षित और परिपक्व कहलाने योग्य है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपने मन की उत्तेजनाओं और आवेगों पर नियंत्रण नहीं रख पाता, उसकी शिक्षा और योग्यता भी व्यर्थ सिद्ध हो जाती है। जीवन में सफलता पाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति स्वयं का स्वामी बने और अपनी भावनाओं को संतुलित रखे।

इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि आत्मसंयम के अभाव ने अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तियों के जीवन को नष्ट कर दिया। उनकी उच्च आकांक्षाएं, अद्भुत योग्यताएं और उपलब्धियां इसलिए निष्फल हो गईं क्योंकि वे अपने मन को नियंत्रित नहीं कर सके। जब व्यक्ति उत्तेजनाओं के प्रवाह में बह जाता है, तब वह अपने विवेक को खो देता है और वही क्षण उसके पतन का कारण बनता है। अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं, जहां लोग क्षणिक क्रोध के कारण ऐसे निर्णय ले लेते हैं, जिनका दुष्परिणाम उन्हें जीवनभर भुगतना पड़ता है।

समाज में प्रतिदिन ऐसी घटनाएं सुनने को मिलती हैं, जहां क्रोध के आवेश में आकर व्यक्ति हिंसक हो जाता है और अपने ही जीवन को संकट में डाल देता है। क्रोध कुछ क्षणों का होता है, लेकिन उसका प्रभाव स्थायी हो सकता है। यह व्यक्ति के चरित्र पर ऐसा दाग छोड़ जाता है, जिसे मिटाना कठिन होता है। क्रोध के प्रभाव में व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है, उसके विचारों की दिशा बदल जाती है और वह सही-गलत का भेद भूल जाता है। परिणामस्वरूप उसका जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और वह पश्चाताप की अग्नि में जलता रहता है।

क्रोध केवल मानसिक समस्या नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव शारीरिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी पड़ता है। यह एक प्रकार का आत्मदाह है, जो धीरे-धीरे व्यक्ति की ऊर्जा और शांति को नष्ट करता है। वैज्ञानिक शोध भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि क्रोध व्यक्ति की कार्यक्षमता को कम कर देता है और शरीर में हानिकारक तत्वों का निर्माण करता है। इस प्रकार क्रोध न केवल मानसिक संतुलन को बिगाड़ता है, बल्कि शरीर को भी नुकसान पहुंचाता है।

व्यक्ति का स्वभाव उसके जीवन को निर्धारित करता है। यदि कोई व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होता है, तो उसका प्रभाव केवल उसी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसके परिवार और समाज पर भी पड़ता है। एक क्रोधी व्यक्ति के कारण परिवार की शांति भंग हो जाती है और संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। लोग ऐसे व्यक्ति से दूरी बनाना पसंद करते हैं, क्योंकि उसका व्यवहार अप्रत्याशित और अस्थिर होता है। इस प्रकार क्रोध व्यक्ति को अकेला कर देता है और उसे सामाजिक रूप से भी कमजोर बना देता है।

संयम का अर्थ केवल क्रोध को दबाना नहीं है, बल्कि अपने मन को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है कि वह परिस्थितियों के अनुसार संतुलित प्रतिक्रिया दे सके। जब व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण रखना सीख लेता है, तब वह हर परिस्थिति में स्थिर और शांत रह सकता है। यह स्थिति उसे जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है।

उत्तेजनाओं से बचने के लिए सबसे आवश्यक है आत्मचेतना। व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि क्रोध का कोई लाभ नहीं है, बल्कि यह केवल हानि ही पहुंचाता है। जब भी क्रोध उत्पन्न हो, उस समय तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय कुछ समय के लिए मौन धारण करना चाहिए। थोड़ी देर के लिए उस स्थान से हट जाना या किसी अन्य कार्य में लग जाना भी सहायक हो सकता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने मन को शांत कर सकता है और अनावश्यक विवाद से बच सकता है।

इसके अतिरिक्त, सहिष्णुता और क्षमा का भाव भी अत्यंत आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति हमारे प्रति कठोर व्यवहार करता है, तो हमें भी उसी प्रकार प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता नहीं है। मुस्कराकर और धैर्यपूर्वक स्थिति को संभालना ही सच्ची समझदारी है। जब हम क्रोध के स्थान पर शांति का मार्ग अपनाते हैं, तो सामने वाला व्यक्ति भी धीरे-धीरे शांत हो जाता है। इस प्रकार हम न केवल स्वयं को बल्कि दूसरों को भी सकारात्मक दिशा में प्रेरित कर सकते हैं।

जीवन का उद्देश्य अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना है। संयम इस यात्रा का मार्गदर्शक है, जो हमें सही दिशा में ले जाता है। यदि हम अपने जीवन में संयम को अपनाते हैं और क्रोध जैसी नकारात्मक भावनाओं से दूर रहते हैं, तो हमारा जीवन अधिक सुखी और सफल बन सकता है। संयम हमें आंतरिक शक्ति प्रदान करता है और हमें एक बेहतर मनुष्य बनने की प्रेरणा देता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि संयम ही वह कवच है, जो हमें जीवन की कठिन परिस्थितियों से बचाता है। यह हमें न केवल बाहरी संघर्षों से सुरक्षित रखता है, बल्कि हमारे भीतर की अशांति को भी समाप्त करता है। यदि हम संयम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लें, तो हम निश्चित रूप से एक संतुलित, शांत और सफल जीवन जी सकते हैं।

कांतिलाल मांडोत

क्या भारतीय राजनीति में अब उम्र की सीमा तय होनी चाहिए?

[सत्ता का आखिरी मोहः जब शरीर हार जाए, पर पद न छूटे]

[राज्यसभा में कांपती आवाज में शपथ, लोकतंत्र के सामने खड़ा सवाल]

6 अप्रैल को राज्यसभा के शपथ ग्रहण कक्ष में जो दृश्य दिखाई दिया, उसने पूरे देश को भीतर तक झकझोर दिया। 85 वर्षीय शरद पवार व्हीलचेयर पर बैठकर सदन में पहुंचे। सदन में अचानक सन्नाटा छा गया। दशकों तक महाराष्ट्र की राजनीति को अपनी रणनीति, दूरदर्शिता और प्रभाव से दिशा देने वाला यह बड़ा नेता उस दिन बेहद कमजोर और थका हुआ दिखाई दे रहा था। शपथ के शब्द बोलते समय उनकी आवाज कांप रही थी, शब्द लड़खड़ा रहे थे और चेहरा थकान से भरा हुआ था। वह केवल एक शपथ ग्रहण समारोह नहीं था; वह भारतीय राजनीति के सामने खड़ा एक कठोर और असहज प्रश्न था–क्या सत्ता का मोह इतना बड़ा हो सकता है कि शरीर जवाब दे देने के बाद भी नेता कुर्सी छोड़ने को तैयार न हों?

यही वह क्षण था, जिसने राजनीति में सेवानिवृत्ति की आवश्यकता पर नई बहस खड़ी कर दी। जिस प्रकार सेना, न्यायपालिका, प्रशासन और अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं में एक निश्चित आयु के बाद व्यक्ति को जिम्मेदारी छोड़नी पड़ती है, उसी प्रकार राजनीति में भी कोई स्पष्ट सीमा क्यों नहीं होनी चाहिए? क्या देश और राज्यों का भविष्य अनिश्चित काल तक कुछ ही लोगों के हाथों में रहना चाहिए? क्या लोकतंत्र का अर्थ केवल यही है कि एक ही पीढ़ी लगातार सत्ता में बनी रहे? राजनीति केवल अनुभव का क्षेत्र नहीं है; यह ऊर्जा, सक्रियता, त्वरित निर्णय और बदलते समय को समझने की क्षमता का भी क्षेत्र है। यदि व्यवस्था में समय पर परिवर्तन नहीं होगा, तो राजनीति धीरे-धीरे ठहराव का शिकार हो जाएगी।

सबसे बड़ा सच यह है कि उम्र के साथ अनुभव बढ़ता है, लेकिन शरीर और मन की सीमाएं भी सामने आने लगती हैं। आज की राजनीति पहले जैसी नहीं रही। अब केवल भाषण देना या चुनाव जीतना काफी नहीं। नेता को तकनीक समझनी होती है, युवाओं की आकांक्षाएं सुननी होती हैं, बदलती अर्थव्यवस्था पर नजर रखनी होती है और तेज फैसले लेने होते हैं। ऐसे समय में यदि कोई नेता शारीरिक रूप से कमजोर हो, चलने-फिरने में कठिनाई हो या लंबे समय तक बोल न पाता हो, तो वह कितनी प्रभावी भूमिका निभा पाएगा? केवल पद पर बने रहना और सक्रिय नेतृत्व करना, दोनों अलग बातें हैं।

शरद पवार के मामले में यह सवाल इसलिए गंभीर हो जाता है, क्योंकि उन्होंने महाराष्ट्र और देश की राजनीति में लंबे समय तक अहम भूमिका निभाई है। उनके अनुभव और राजनीतिक कौशल पर कभी संदेह नहीं रहा। लेकिन राज्यसभा में शपथ के दौरान उनकी हालत ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया। कांपती आवाज और थकी हुई देह देखकर हर किसी के मन में एक ही सवाल उठा–क्या इस अवस्था में वे राज्यसभा में प्रभावी भूमिका निभा पाएंगे? क्या वे किसानों, युवाओं, उद्योगों और विकास के मुद्दों पर पहले जैसी सक्रियता दिखा पाएंगे? जब शरीर जवाब देने लगे, तब कुर्सी पर बने रहना ताकत नहीं, विवशता लगने लगता है।

अब समय आ गया है कि राजनीति में भी सेवानिवृत्ति की एक स्पष्ट सीमा तय हो। यदि 75 या 80 वर्ष के बाद नेता सक्रिय पद छोड़कर मार्गदर्शक बनें, तो इससे राजनीति कमजोर नहीं, बल्कि अधिक मजबूत होगी। उनका अनुभव और प्रभाव खत्म नहीं होगा; वे सलाहकार, संरक्षक और प्रेरणा-स्रोत बने रहेंगे। लेकिन नेतृत्व उन लोगों के हाथों में जाएगा, जिनके पास ऊर्जा, नई सोच और बदलते समय के साथ चलने की क्षमता है। लोकतंत्र की असली ताकत इसी संतुलन में है–जहां अनुभव रास्ता दिखाए और नई पीढ़ी आगे बढ़कर जिम्मेदारी संभाले।

आज देश की राजनीति की सबसे बड़ी समस्या यह है कि कई दल कुछ पुराने चेहरों तक सिमट गए हैं। नई सोच, नए विचार और नए नेतृत्व के लिए जगह ही नहीं बची। हजारों युवा कार्यकर्ता वर्षों तक मेहनत करते हैं, लेकिन आगे बढ़ नहीं पाते, क्योंकि ऊपर की जगह खाली नहीं होती। नतीजा यह होता है कि निराशा बढ़ती है, संगठन जड़ हो जाता है और जनता का भरोसा कमजोर पड़ने लगता है। जब नई पीढ़ी को मौका नहीं मिलेगा, तो युवाओं की समस्याएं कौन समझेगा? बेरोजगारी, शिक्षा, तकनीक, कृषि, स्टार्टअप और बदलती अर्थव्यवस्था को वही पीढ़ी बेहतर समझ सकती है, जो इन्हें खुद जी रही है। इसलिए अब समय है कि नई पीढ़ी के लिए रास्ता खोला जाए।

कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि यदि कोई नेता स्वस्थ है, तो उसे राजनीति में बने रहने का अधिकार है। यह बात कुछ हद तक सही है, लेकिन केवल स्वस्थ होना काफी नहीं। राजनीति में बने रहने का फैसला केवल व्यक्ति की इच्छा नहीं, लोकतंत्र की जरूरत से तय होना चाहिए। यदि हर वरिष्ठ नेता खुद को सक्षम बताकर पद छोड़ने से इंकार करे, तो नई पीढ़ी को अवसर कब मिलेगा? लोकतंत्र का मूल सिद्धांत है कि कोई भी पद स्थायी नहीं होता। व्यक्ति पद से बड़ा नहीं होता। उसका सम्मान तब और बढ़ता है, जब वह सही समय पर पीछे हटने का साहस दिखाए। कुर्सी छोड़ना हार नहीं, कई बार सबसे बड़ी जीत होती है।

राज्यसभा में 6 अप्रैल 2026 को सामने आया वह क्षण केवल शरद पवार की निजी अवस्था का दृश्य नहीं था; वह भारतीय राजनीति के लिए एक गहरी चेतावनी बनकर उभरा। उसने साफ संकेत दिया कि जब शरीर जवाब देने लगे, तब अंततः कुर्सी भी किसी नेता को सहारा नहीं दे सकती। सच्चा और महान नेता वही होता है, जो केवल सत्ता पर बने रहना नहीं जानता, बल्कि सही समय पर सम्मान के साथ उसे छोड़ने का साहस भी रखता है। आज शरद पवार जैसे वरिष्ठ नेताओं के सामने यह अवसर है कि वे स्वयं आगे बढ़कर राजनीति में सेवानिवृत्ति की नई परंपरा शुरू करें। यदि वे सम्मानपूर्वक पीछे हटकर नई पीढ़ी के लिए रास्ता खोलते हैं, तो वही उनका सबसे बड़ा, सबसे प्रेरक और सबसे ऐतिहासिक योगदान माना जाएगा।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

भवानीपुर से ममता बनर्जी का नामांकन और पांच राज्यों में चुनावी सरगर्मी का चरम

भारतीय लोकतंत्र का सबसे जीवंत और गतिशील पहलू चुनाव प्रक्रिया है, जहां न केवल राजनीतिक दलों की ताकत का परीक्षण होता है बल्कि जनता की आकांक्षाओं और उम्मीदों का भी प्रतिबिंब देखने को मिलता है। इस समय देश के पांच राज्यों में चल रहे विधानसभा चुनावों ने राजनीतिक माहौल को पूरी तरह गरमा दिया है। विशेष रूप से ममता बनर्जी द्वारा भवानीपुर सीट से नामांकन दाखिल करने के बाद पश्चिम बंगाल की राजनीति एक बार फिर केंद्र में आ गई है। उनके सामने भारतीय जनता पार्टी के नेता सुवेंदु अधिकारी को उम्मीदवार बनाए जाने से मुकाबला बेहद दिलचस्प और प्रतिष्ठापूर्ण बन गया है।

भवानीपुर सीट का राजनीतिक महत्व केवल एक विधानसभा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राज्य की सत्ता और नेतृत्व की दिशा तय करने वाला केंद्र बन चुका है। ममता बनर्जी पहले भी यहां से कई बार विधायक रह चुकी हैं और 2011 में इसी क्षेत्र से जीत हासिल कर उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। 2021 में नंदीग्राम से हार के बाद उन्होंने भवानीपुर उपचुनाव जीतकर अपनी राजनीतिक स्थिति को फिर मजबूत किया था। इस बार भी यह सीट उनके लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गई है।

दूसरी ओर सुवेंदु अधिकारी का राजनीतिक सफर भी कम रोचक नहीं है। कभी तृणमूल कांग्रेस के अहम नेता रहे अधिकारी अब भाजपा के प्रमुख चेहरों में शामिल हैं और नेता प्रतिपक्ष के रूप में उनकी भूमिका बेहद प्रभावशाली रही है। 2021 में नंदीग्राम में ममता बनर्जी को हराकर उन्होंने खुद को एक बड़े राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थापित किया था। अब भवानीपुर में दोनों नेताओं के आमने-सामने आने से चुनावी मुकाबला और अधिक रोमांचक हो गया है।

इस पूरे घटनाक्रम के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी ने भी इस चुनाव को राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण बना दिया है। भाजपा इस चुनाव को केवल राज्य स्तर का नहीं बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के दृष्टिकोण से भी देख रही है। वहीं ममता बनर्जी लगातार भाजपा पर बंगाल के खिलाफ साजिश रचने का आरोप लगाते हुए जनता को सतर्क रहने की अपील कर रही हैं। उनके बयानों में तीखापन और राजनीतिक आक्रामकता साफ दिखाई दे रही है, जो इस चुनाव को और भी धार दे रही है।

भवानीपुर की सामाजिक संरचना भी इस चुनाव को विशेष बनाती है। यहां बंगाली हिंदू, मुस्लिम और गैर बंगाली हिंदू मतदाताओं का मिश्रण है, जिससे चुनावी समीकरण जटिल हो जाते हैं। हाल ही में मतदाता सूची से बड़ी संख्या में नाम हटाए जाने का मुद्दा भी राजनीतिक विवाद का कारण बना हुआ है। विभिन्न दल इस मुद्दे को अपने-अपने तरीके से उठाकर मतदाताओं को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं।

पश्चिम बंगाल के अलावा अन्य राज्यों में भी चुनावी गतिविधियां अपने चरम पर पहुंच चुकी हैं। असम, केरल और पुडुचेरी में 9 अप्रैल को एक ही चरण में मतदान होना है, जिसके चलते चुनाव प्रचार समाप्त हो चुका है। इन राज्यों में अब प्रशासनिक तैयारियां अंतिम चरण में हैं और मतदान कर्मियों को ईवीएम तथा अन्य आवश्यक सामग्री के साथ मतदान केंद्रों पर भेजा जा चुका है। चुनाव आयोग ने शांतिपूर्ण और निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित करने के लिए व्यापक इंतजाम किए हैं। तमिलनाडु में भी चुनावी हलचल कम नहीं है। वहां के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन और उनके सहयोगी नेताओं द्वारा लगातार चुनावी सभाएं की जा रही हैं। उनके पुत्र और डीएमके नेता उदयनिधि स्टालिन ने भाजपा और एआईएडीएमके पर तीखा हमला करते हुए कहा कि यदि ये दल सत्ता में आते हैं तो राज्य पिछड़ जाएगा। इस प्रकार के बयान चुनावी माहौल को और अधिक तीखा बना रहे हैं।

इन पांच राज्यों के चुनावों का शेड्यूल भी काफी महत्वपूर्ण है। पश्चिम बंगाल में दो चरणों में मतदान होना है, जबकि तमिलनाडु में एक ही चरण में चुनाव संपन्न होगा। इन सभी राज्यों के नतीजे 4 मई को घोषित किए जाएंगे, जिसके साथ ही करीब 51 दिनों तक चलने वाली चुनावी प्रक्रिया का समापन होगा। इस दौरान राजनीतिक दलों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है और हर संभव प्रयास किया जा रहा है कि मतदाताओं को अपने पक्ष में किया जा सके।

चुनाव आयोग ने भी इस बार विशेष सख्ती दिखाते हुए स्पष्ट कर दिया है कि चुनाव प्रक्रिया को भयमुक्त, हिंसामुक्त और पारदर्शी बनाया जाएगा। बंगाल जैसे राज्यों में जहां पहले चुनावी हिंसा की घटनाएं सामने आती रही हैं, वहां आयोग की यह सख्ती बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इससे मतदाताओं में विश्वास बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है ताकि वे बिना किसी डर के अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें।

इस पूरे चुनावी परिदृश्य में एक बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि भारतीय राजनीति में प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है और राजनीतिक दलों के बीच मुकाबला पहले से अधिक तीखा हो गया है। ममता बनर्जी और सुवेंदु अधिकारी के बीच सीधा मुकाबला केवल एक सीट की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह विचारधाराओं, नेतृत्व शैली और राजनीतिक रणनीतियों की भी टक्कर है।

अंत मे कहा जा सकता है कि पांच राज्यों में हो रहे ये चुनाव भारतीय लोकतंत्र की शक्ति और विविधता का प्रतीक हैं। जनता का फैसला ही यह तय करेगा कि किसे सत्ता मिलेगी और किसकी रणनीति सफल होगी। भवानीपुर से शुरू हुई यह राजनीतिक कहानी आने वाले दिनों में और भी रोचक मोड़ ले सकती है, जिसका असर न केवल राज्य बल्कि राष्ट्रीय राजनीति पर भी पड़ेगा।

कांतिलाल मांडोत

एक बेमतलब, बेमक़सद युद्ध में विराम

ईरान युद्ध में दो सप्ताह का विराम हो गया है। हमले रुक रहे हैं और होर्मुज का जलमार्ग खुल जाएगा। यह शुभ समाचार है। मार्च के पहले सप्ताह में मैंने इस युद्ध को 'बेमतलब, बेमक़सद' कहा था। बात वही है। इतनी तबाही से मिला क्या? ट्रम्प ने 'रिजीम चेंज' और ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रद्द करने का लक्ष्य बताया था। 40 दिन की बमबारी के बाद वहां वही शासन है और ईरान का एनरिच्ड यूरेनियम उन्हीं के पास है। अब होर्मुज पर है। युद्ध से पहले यह जलमार्ग खुला था। इस युद्ध ने इसका नियंत्रण ईरान को दे दिया। ईरान के पास वह हथियार आ गया जो परमाणु अस्त्रों से भी अधिक घातक है। जैसे अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ फरीद ज़कारिया ने कहा है, 'अमेरिका ने ईरान को वह हथियार दे दिया है जिससे वह जब चाहें तेल की सप्लाई रोक सकता है'। ईरान तो हर जहाज़ के गुजरने का 2 मिलियन डालर फ़ीस लेना चाहता है। अगर यह बात मान ली गई तो ईरान फ़ारस की खाड़ी में साऊदी अरब के बाद दूसरा सबसे रईस देश बन जाएगा। जो ईरान को तबाह करने निकले थे वही उसके उपकारी बन गए। इस समय तो ईरान विजेता नज़र आता है। उन्होंने युद्ध शुरू नहीं किया। वह तबाही सह गए जो शायद ही कोई देश सह सकता। सारी टॉप लीडरशिप मार डाली गई। उनका सारा इंफ्रास्ट्रक्चर तबाह हो गया, पर उन्होंने झुकने से इंकार कर दिया। जिस कट्टर शासन को ट्रम्प और नेतन्याहू ख़त्म करने निकले थे वह और मज़बूत हो गया है, अगर कल को होर्मुज पर नियंत्रण छोड़ना भी पड़े तो वह कह सकते हैं कि यह तो पहले से खुला था। अभी भी वह कह रहे हैं कि यह युद्ध विराम है, युद्ध का अंत नहीं। युद्ध जो अदावत और कड़वाहट पैदा कर गया है वह बहुत देर तक रहेगी। विशेष तौर पर ईरान और इज़राइल के रिश्ते ख़राब रहेंगे। नेतन्याहू कह रहे हैं कि युद्ध विराम ट्रम्प का निर्णय है जिसका वह समर्थन कर रहे हैं। वह खुश नज़र नहीं आ रहे, क्योंकि उनके राजनीतिक लक्ष्य अधूरे युद्ध से पूरे नहीं हो रहे। उन्होंने घोषणा की है यह युद्ध विराम लेबनान पर लागू नहीं होगा। अर्थात अभी नेतन्याहू की विनाश की प्यास नहीं बुझी।

सबसे अधिक नुक्सान अमेरिका और उसके राष्ट्रपति का हुआ है। वहां लोगों ने युद्ध विराम का स्वागत किया है, पर पूछा जा रहा है कि जनाब, वहां करने क्या गए थे? ईरान से अमेरिका को कोई सीधा ख़तरा नहीं है फिर अरबों डालर क्यों बहा दिए? एक दिन पहले ट्रम्प ने घोषणा की थी कि 'रात भर में ईरानी सभ्यता मिटा देंगे'। ऐसी भाषा तो कोई असंतुलित व्यक्ति ही इस्तेमाल कर सकता है। वह ईरान और उसके नेतृत्व को भद्दी गालियां निकाल चुके हैं क्योंकि निकलने का सम्मानजनक रास्ता नहीं मिल रहा था। अब किसी तरह उन्होंने खुद को इस दलदल से निकाल लिया है लेकिन विश्वसनीयता ज़ीरो हो गई है। अमेरिका की नैतिक हार हुई है और उनकी पावर की सीमा दुनिया ने देख ली है। राष्ट्रपति के शब्दों और कदमों का लम्बे समय में क्या नुक्सान होगा, इसका आंकलन अभी बाक़ी है। बाक़ी दुनिया का अमेरिका के प्रति नज़रिया बदल रहा है। जिस देश को स्थिरता की शक्ति समझा गया था उसी ने विश्व व्यवस्था को अस्थिर कर दिया।

विभिन्न राजधानियों में अब नई विश्व व्यवस्था पर चर्चा शुरू होगी। ट्रम्प ने हर अंतर्राष्ट्रीय संस्था को तबाह कर दिया है। फ़िलहाल तो युद्ध विराम हो रहा है जो हमारे लिए अच्छी खबर है। तेल की क़ीमतें नीचे आना शुरू हो गई हैं। शुक्रवार को पाकिस्तान में दोनों पक्षों में सीधी वार्ता हो सकती है। फरीद ज़कारिया ने युद्ध विराम को 'नाजुक' कहा है। आशा करनी चाहिए कि यह अस्थाई नहीं रहता क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्था प्राकृतिक तौर पर फ़ारस की खाड़ी से जुड़ी हुई है,जो बात पूर्व नौसेना प्रमुख एडमिरल अरुण प्रकाश ने भी हमें याद करवाई है। हमारे 16 जहाज़ अभी उधर रुकें हुए हैं। गैस की हालत चिन्ताजनक है। कतर और यूएई से हमारी 53% गैस आती है। हम 85% तेल आयात करते हैं, यह हमारी बड़ी कमजोरी है क्योंकि जब भी कोई वैश्विक संकट खड़ा होता है तो हमारा आयात बाधित हो जाता है। 55-60% तेल खाड़ी देशों से आता है जिसका 40% होर्मुज से निकलता है। तेल की बढ़ती क़ीमतों से हमारी अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो सकती है। चीन के पास 1.4 अरब बैरल तेल का भंडार है जबकि हमारा भंडार केवल 10 करोड़ बैरल का है।

इसे बढ़ाने की ज़रूरत है। गैस की कमी के कारण बड़ी संख्या में प्रवासी गांव लौटना शुरू हो गए थे क्योंकि ढाबे और छोटे उद्योग या तो बंद हो गए हैं या पूरी क्षमता से काम नहीं कर रहे। जो रसोई गैस पर चलती है वह भी कमी महसूस कर रही है। हमें तो खुद गैस बुक किए एक महीने से ऊपर हो गया है।

नम्बर आ गया है, सिलेंडर कब आएगा, पता नहीं। मामला केवल गैस या तेल का ही नहीं खाड़ी के देश हमारी अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग हैं। इस युद्ध का असर हमारे निर्यात पर पड़ रहा है। दुनिया में भारत दूसरा सबसे बड़ा खाद का खपतकार है। 72% यूरिया वहां से आता है। सप्लाई की कमी का ख़रीफ़ की फसल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

अभी तक सरकार ने तेल की क़ीमतें बढ़ने नहीं दी। देखते हैं पांच विधानसभा के चुनाव होने के बाद क्या होता है? आशा करनी चाहिए कि क़ीमतें बढ़ाने की नौबत नहीं आएगी। यह अच्छी बात है कि सरकार अब संतुलन क़ायम करने की कोशिश कर रही है। देर से ही सही ईरान के साथ रिश्ता जोड़ने की कोशिश हो रही है। पूर्व विदेश सचिव निरुपमा मेनन राव ने लिखा है, 'ईरान भारत के लिए महत्वहीन नहीं है...हां, हमें खाड़ी में अपने लोगों का ध्यान रखना है। हां, हमने उधर से उर्जा का बंदोबस्त करना है। पर हमें ईरान के साथ काम करने वाले संबंध रखने हैं। यह हमारी रणनीतिक ज़रूरत है। अगर भारत एक पक्ष का समर्थक बन जाए तो हमारे विकल्प सीमित हो जाते हैं। हम वह देश हैं जिसके चारों तरफ़ हित हैं'। इस युद्ध ने यह बात और भी स्पष्ट कर दी। ईरान भी अब मध्य-पूर्व में बड़ा खिलाड़ी बन गया है। ट्रम्प ने ईरान के साथ बातचीत के लिए पाकिस्तान को चुना है। उन्होंने युद्ध विराम में चीन की भूमिका को स्वीकार किया है।

इस बीच पाकिस्तान की 'मध्यस्थता' को लेकर बहुत चर्चा है। भारत में विशेष तौर पर विपक्ष इसे सरकार की असफलता कह रहा है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि 'हम दलाली नहीं करते'। हैरानी है कि जयशंकर जैसा वरिष्ठ राजनैयिक ऐसी अकूटनैतिक भाषा का इस्तेमाल कर रहा है।

मध्यस्थता करनी दलाली नहीं होती। हमने भी कई बार प्रयास किया है। जवाहर लाल नेहरू ने 1950 में कोरिया युद्ध में मध्यस्थता की थी। 1956 के स्वेज़ नहर के विवाद को हल करने में भी हमारी भूमिका रही है। कारगिल युद्ध में बिल क्लिंटन ने नवाज़ शरीफ़ को बुला कर बंदा बनने को कहा था जिसके बाद युद्ध ख़त्म हो गया। याद रखिए मुम्बई की सबसे महत्वपूर्ण सड़क 'दलाल स्ट्रीट' है जिस पर बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज स्थित है। पाकिस्तान को दलाल कहकर हमने खुद को अनावश्यक आलोचना के लिए छोड़ दिया कि हम कोप भवन में हैं क्योंकि पाकिस्तान को पूछा गया, पर हमें नहीं पूछा गया। डोनाल्ड ट्रम्प ने प्रधानमंत्री मोदी को फ़ोन ज़रूर किया,पर इसे डैमेज कंट्रोल ही कहा जा सकता है। हमारे प्रधानमंत्री ने अमेरिका के साथ सम्बंध सुदृढ़ करने में बहुत प्रयास किया है, पर जब निर्णायक क्षण आया तो ट्रम्प ने पाकिस्तान के सेना प्रमुख को महत्व दे दिया। भारत और अमेरिका के रिश्तों की कमजोरी उजागर हो गई है जो बुरी बात भी नहीं।

ट्रम्प जैसे से तो दूरी बनाकर रखना बेहतर है। हमारे लिए यह असुखद ज़रूर है क्योंकि इस युद्ध का सबसे अधिक हम पर प्रभाव पड़ा है। इस क्षेत्र में भारत सबसे बड़ी ताक़त है, पर हमारे पड़ोस में चल रहे टकराव में हमारी कोई भूमिका नहीं है। पर पाकिस्तान भी वाहक है, वार्ता का शिल्पकार नहीं है। हां,पाकिस्तान को अपनी छवि बेहतर करने का मौक़ा मिल गया है। बड़े सालों के बाद वह फिर प्रासंगिक बन गए हैं। यह वह देश है जिसने ओसामा बिन लादेन को वर्षों छिपाए रखा था। जिसका हर बड़ी आतंकी घटना में हाथ है। मुनीर शान्ति का प्रयास कर रहा है तो उसका देश अफ़ग़ानिस्तान पर बम बरसा रहा है। पाकिस्तान के बारे हम यह प्रभाव दे रहे हैं कि हमें शान्ति की कम, पाकिस्तान को मिली अस्थाई बढ़त की अधिक चिन्ता है। मैं अस्थाई इसलिए कह रहा हूं क्योंकि ट्रम्प किसी के सगे नहीं हैं। पाकिस्तान तो वैसे भी इस्तेमाल करने की वस्तु है। समय-समय पर उन्होंने अमेरिका, साऊदी अरब और चीन को अपना इस्तेमाल करने दिया है। हमारा हित इसमें है कि युद्ध विराम स्थाई रहे।

इसका अभी कोई यक़ीन नहीं। पाकिस्तान तो साइड शो है। वह देश हमारे बराबर है ही नहीं, न जाने हम उनके साथ बहस में क्यों पड़ते हैं? हमें बड़े आश्वस्त देश की तरह बर्ताव करना चाहिए, 'धुरंधर' को फ़िल्म तक ही सीमित रहने देना चाहिए।

स्वामी– स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ल द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

600 रुपये और मोबाइल के विवाद में मजदूर की पीट-पीटकर हत्या, आरोपी साथी गिरफ्तार

निगोहां (लखनऊ)। निगोहां थाना क्षेत्र के नंदौली गांव में शराब के नशे में मात्र 600 रुपये और मोबाइल फोन के विवाद को लेकर एक मजदूर की उसके ही साथी ने बेरहमी से पीट-पीटकर हत्या कर दी। मंगलवार को बेनीगंज मार्ग पर सड़क किनारे मिले 22 वर्षीय रैकिश रावत के शव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में करीब दस गंभीर चोटों की पुष्टि हुई, जिसके बाद पुलिस ने मृतक के भाई की तहरीर पर कार्रवाई करते हुए आरोपी धनराज उर्फ टाटू को गिरफ्तार कर लिया है। थाना प्रभारी अनुज तिवारी के अनुसार, मजदूरी के बाद शराब पीने के दौरान हुए विवाद में आरोपी ने रैकिश का सामान छीन लिया था और विरोध करने पर उसे जान से मार दिया। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी का पुराना आपराधिक इतिहास भी रहा है, वहीं इस हृदयविदारक घटना से मृतक के परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

नेटवर्क बाधित होने से उपभोक्ता परेशान

बिसवां (सीतापुर)। इधर कई दिनों से समय-समय पर मोबाइल सिमों से नेटवर्क गायब हो जाने से उपभोक्ताओं को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। मोबाइल में जियो, बीएसएनएल और एयरटेल आदि कम्पनियों के सिमों से नेटवर्क गायब हो जा रहा है जो कई कई बार घंटों तक गायब रहता है जिससे बातचीत के अलावा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के कार्यों में खासी दिक्कतें आ रही हैं। जहांगीराबाद क्षेत्र में वृहस्पतिवार को सुबह से ही जियो,बीएसएनएल व एयरटेल के नेटवर्क मोबाइल सेटों से एकदम से गायब हो गये जिससे घंटों लोग परेशान दिखे। जियो नेटवर्क दो घंटे बाद बहाल हो गया किन्तु एयरटेल का नेटवर्क सुबह 11 बजे तक भी नहीं सही हो सका। ग्रामीणों का कहना है कि जब जब आंधी पानी या बारिश आती है तब तब बिजली सप्लाई बंद हो जाती है। टावर वाले जेनरेटर नहीं चलाते हैं, डीजल बचाते हैं जिससे बैट्रियां न चार्ज होने से घंटों नेटवर्क बाधित रहता है तथा बिजली, सप्लाई शुरू होने पर नेटवर्क पुनः बहाल हो जाता है। उपभोक्ता सबाहुद्दीन, रामू नाग, रामसिंह वर्मा, प्रशांत श्रीवास्तव, विशाल नंद, मो0 जुबेर, डा0 वकील अहमद खान, आशीष गौड़, शिवम् गुप्ता व शशांक अमन सहित दर्जनों लोगों ने जिम्मेदार अधिकारियों से इस समस्या का स्थाई समाधान कराये जाने की मांग की है।

सीएचसी डीघ क्षेत्र में आयुष्मान एवं आभा आईडी कैंप का निरीक्षण

भदोही। दिनांक 9 अप्रैल 2026 को मुख्य चिकित्सा अधिकारी महोदय द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) डीघ के अंतर्गत संचालित आयुष्मान भारत एवं आभा आईडी कार्ड अभियान के तहत ग्राम सभा बेरवा में लगाए गए कैंप का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान एएनएम श्रीमती माया पांडे, आशा एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उपस्थित रहीं। कैंप में ग्रामीणों के आयुष्मान कार्ड एवं आभा आईडी कार्ड बनाए जा रहे थे। इस दौरान चिकित्सा अधीक्षक भी मौके पर मौजूद रहे और व्यवस्थाओं का जायजा लिया। तत्पश्चात मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा ग्राम सभा गोपालपुर में कोटेदार के घर आयोजित आयुष्मान कैंप का भी निरीक्षण किया गया। यहां एएनएम श्रीमती रीमा भारती एवं पंचायत सहायक द्वारा ग्रामीणों के आयुष्मान कार्ड एवं आभा आईडी कार्ड बनाए जा रहे थे। निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने संबंधित कर्मचारियों को निर्देशित किया कि अधिक से अधिक पात्र लाभार्थियों के कार्ड बनाकर उन्हें सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ दिलाया जाए। साथ ही कैंप में आने वाले लोगों को योजनाओं की जानकारी देने पर भी जोर दिया गया।

आवास के नाम पर 29 महिलाओं से लाखों की ठगी, मुख्यमंत्री की चौखट तक पहुँची चीखें

● .....सरकारी योजनाओं की आड़ में जालसाजी का खेल; मंजू और उसके पति पर लगा 4.56 लाख की वसूली का आरोप, पीड़ितों ने खोली पोल!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ! मोहनलालगंज क्षेत्र के निगोहां स्थित लालता खेड़ा गाँव में प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर ठगी का एक ऐसा सनसनीखेज मामला सामने आया है, जिसने सिस्टम की सुरक्षा पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। आरोपी मंजू और उसके पति ने खुद को चेयरमैन प्रतिनिधि का करीबी बताकर गाँव की भोली-भाली महिलाओं को पक्के मकान का लालच दिया और उनकी मेहनत की गाढ़ी कमाई लूट ली। ठगी की भयावहता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि फूल माता से 85,000, मिटाना से ?60,000, मिथिलेश कुमारी से ?49,000 और चंदराणा से 38,000 जैसी बड़ी रकमें वसूली गईं। इसके अलावा सरिता देवी से 28,000, रत्ता देवी से 11,000, अरुणा व बेला से ?8,500-8,500, सुदेवी व प्रतिभा से 7,000-7,000, किरण से 6,500, संगीता से 5,000 और सुनील से ?4,300 सहित कुल 29 ग्रामीणों से 4 लाख 56 हजार हड़प लिए गए। आज जब इन पीड़ितों के पास न मकान बचा और न ही जमा-पूंजी, तब आक्रोशित माधुरी देवी, सविता, शांति देवी और बेला समेत दर्जनों ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाई है। चेयरमैन प्रतिनिधि डॉ. अजय पांडे 'सत्यम' ने भी इस जालसाजी पर नाराजगी जताते हुए पुलिस से सख्त कार्रवाई की मांग की है, ताकि इन गरीबों का पैसा वापस मिल सके।

तिलक और शादी की खुशियां आग की लपटों में हुई राख

महमूदाबाद- सीतापुर महमूदाबाद क्षेत्र के ग्राम बनियनपुरवा (बिलासपुर कलां) में आज दोपहर भीषण आग ने चार परिवारों की जिंदगी उजाड़ दी। 4 झोपड़ियां और पशु बाड़े जलकर पूरी तरह खाक हो गए। सबसे दर्दनाक बात निकलकर सामने यह आई है कि मायावती के घर 20 अप्रैल को तिलक और 5 मई को शादी थी, सारी तैयारियां, सामान और करीब 1.60 लाख नकद आग में जल गया। हालांकि कोई जनहानि नहीं हुई, लेकिन मवेशी झुलस गए। मौके पर फायर बिग्रेड के कर्मियों ने पहुच कर आग पर काबू पाई, प्रशासन द्वारा राहत सामग्री और भोजन की व्यवस्था करा दी गई है।

पत्रकार एकजुटता और जनहित के मुद्दों पर निगोहां प्रेस क्लब की मासिक बैठक संपन्न

● .....जीके न्यूज़ के संपादक नागेश्वर द्विवेदी ने निगोहां प्रेस क्लब की ग्रहण की सदस्यता।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ के निगोहां में गुरुवार को निगोहां प्रेस क्लब की मासिक बैठक संपन्न हुई, जिसमें पत्रकारों ने संगठन की मजबूती और पत्रकार हितों पर विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर जीके न्यूज़ के संपादक नागेश्वर द्विवेदी ने सदस्यता ग्रहण करते हुए पत्रकारों के सम्मान की रक्षा और उत्पीड़न के खिलाफ एकजुट रहने का संकल्प दिलाया। वरिष्ठ पत्रकार योगेंद्र तिवारी और अखिलेश द्विवेदी ने पत्रकार सुरक्षा व संगठन विस्तार पर जोर दिया, जबकि जय शुक्ला ने बैठक का सफल संचालन किया। कार्यक्रम के दौरान नागेश्वर द्विवेदी द्वारा पत्रकारों को लेखन सामग्री भेंट कर सम्मानित किया गया और साथी सुजीत गुप्ता का जन्मदिन भी धूमधाम से मनाया गया। बैठक में संरक्षक मुकेश द्विवेदी, अध्यक्ष विमल सिंह और महामंत्री प्रदीप द्विवेदी समेत पांच दर्जन से अधिक पत्रकारों ने जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से उठाने और सामूहिक रूप से कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई।

आंधी पानी से गेहूं की फसल को भारी क्षति 20 प्रतिशत गेहूं का नुक्सान

● कई एकड़ गेहूं की फसल काटी हुई खेतों में पड़ी।

दर्जनों किसानों की नहीं हुई थ्रेशरिंग।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। गत दिनों आई तेज आंधी और भारी बारिश से सैकड़ों किसानों की गेहूं की फसल को भारी नुक्सान हुआ है। क्षेत्र में लगभग 300 बीघा गेहूं की फसल पककर खेतों में तैयार खड़ी है। जिसकी कटाई लगभग शुरू हो गई है। अचानक बुधवार शाम को आई तेज आंधी और भारी बारिश के कारण गेहूं की फसल को भारी क्षति पहुंची है। छठवान गांव निवासी हरिनाम वर्मा बताते हैं कि उन्होंने मौसम की नजाकत को देखते हुए फसल की कटाई शुरू कर दी थी अचानक तेज आंधी आने के कारण खेत में कटी पड़ी फसल खेत में बिखर गयी तथा भीग गई। बृजेन्द्र वर्मा ने बताया कि गेहूं की एक एकड़ फसल जो बिल्कुल तैयार खड़ी थी। तेज आंधी से खेतों में ही गिर गई जिससे लगभग 20 प्रतिशत गेहूं का नुक्सान होने की संभावना है। किसान अवध शरण ने बताया कि उनका 1.5 एकड़ गेहूं की थ्रेशरिंग होनी थी,आज ही कल में फसल का दाना घर आ जाता लेकिन अचानक भारी बारिश से लगभग 20 प्रतिशत गेहूं का नुक्सान हो गया है।किसान बैजनाथ ने बताया कि पानी बरस जाने से खेत में खड़ी फसल भीग गई है जिससे गेहूं की उपज पर लगभग 20 प्रतिशत का फर्क पड़ जायेगा।

क्षेत्र के किसान रामनरेश, अशोक वर्मा, सर्वजीत वर्मा, गोविंद प्रसाद, शिव प्रकाश, अमरेन्द्र यादव, नरेंद्र कुमार, योगेन्द्र प्रताप सिंह, गुलाब सिंह व वीरेंद्र कुमार आदि ने बताया कि बेमौसम अचानक एक सप्ताह में दो बार आई भीषण आंधी तूफान और बारिश से गेहूं की फसल को भारी नुक्सान हुआ है।

पूर्व ब्लाक प्रमुख के घर शोक संवेदना जताने वालों का लगा तांता

गोपीगंज। पूर्व ब्लाक प्रमुख और ज्ञानपुर विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ चुके लोकप्रिय नेता दिनेश सिंह के भतीजे और स्व.ज्वाला सिंह के पुत्र केएनपीजी कॉलेज के छात्रनेता रहे राजेश सिंह अन्नू के असामयिक मौत से सारीपुर गांव शोक में डूबा है। पूर्व ब्लाक प्रमुख के घर जिले के साथ आसपास के कई जिलों से शोक संवेदना जताने पहुंचने वालों का बुधवार को तांता लगा रहा। इस दौरान लोगों ने सारीपुर स्थित पूर्व ब्लाक प्रमुख दिनेश सिंह के आवास पहुंच कर शोक संवेदना जताया। इस दौरान वाराणसी, भदोही औराई ज्ञानपुर क्षेत्रों के सैकडों गांवों से लोगों की दस्तक हुई साथ ही आसपास जिलों से बड़ी संख्या में विभिन्न दलों के नेताओ गणमान्य हस्तियों, अधिकारियों, उद्यमियों चिकित्सकों पत्रकारों आदि सभी क्षेत्रों के लोगों का शोक संवेदना पहुंचने का तांता लगा रहा। यह सुबह से देरशाम तक चलता रहा। इस दौरान पूर्व सांसद राजेश मिश्रा, प्रमुख उद्यमी योगेन्द्र मिश्रा, सपा नेता राजेन्द्र दुबे, धीरेंद्र पांडेय, विभूति नारायण सिंह, भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष संतोष पांडेय डा.आनंद मिश्रा, डा. राकेश दुबे, वंशीधर उपाध्याय, सुरेन्द्र मिश्र, अवनीश मिश्र गुड्डू, लल्लू मिश्रा, अरविन्द पांडेय समेत सैकडों की संख्या में लोग संवेदना जताने पहुचें।

मलिहाबाद के बिराहिमपुर में दबंग प्रधान के ऊपर हमले की आड़ में झूठा मुकदमा रचाने का आरोप, जांच में जुटी पुलिस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद (लखनऊ)- मलिहाबाद थाना क्षेत्र के बिराहिमपुर गांव में ग्राम प्रधान रामशंकर पर गंभीर आरोप सामने आए हैं। आरोप है कि प्रधान ने चुनावी रंजिश के चलते हमले की झूठी कहानी गढ़कर पूर्व प्रधान विमल रावत और रामपुर निवासी आदित्य सिंह को फंसाने की कोशिश की। इस मामले ने स्थानीय स्तर पर काफी चर्चा का विषय बना हुआ है, वहीं पुलिस प्रशासन भी अब सक्रिय रूप से जांच में जुट गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, ग्राम प्रधान रामशंकर ने कुछ समय पहले अपने ऊपर हमले का आरोप लगाते हुए पूर्व प्रधान विमल रावत और आदित्य सिंह के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। लेकिन आरोपितों ने शुरू से ही खुद को निर्दोष बताते हुए कहा कि उनका इस घटना से कोई लेना-देना नहीं है और उन्हें केवल चुनावी रंजिश के चलते फंसाया जा रहा है।

विवाद बढ़ने और मामले के तूल पकड़ने के बाद प्रशासन ने इसकी गंभीरता को देखते हुए जांच के आदेश दिए। जांच के दौरान अब महत्वपूर्ण साक्ष्य जुटाने की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। सूत्रों के मुताबिक, जांच अधिकारी ने पूर्व प्रधान विमल रावत के घर से सीसीटीवी फुटेज अपने कब्जे में ले लिए हैं। इसके साथ ही जिस स्थान पर कथित हमले की बात कही गई है, वहां के आसपास लगे अन्य सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग भी पुलिस द्वारा जब्त कर ली गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की जा रही है। हर पहलू को ध्यान में रखते हुए साक्ष्यों की बारीकी से जांच की जा रही है ताकि सच्चाई सामने लाई जा सके। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि जांच पूरी होने के बाद जो भी व्यक्ति दोषी पाया जाएगा, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी, जबकि किसी भी निर्दोष व्यक्ति को फंसने नहीं दिया जाएगा। इस घटनाक्रम के बाद गांव में राजनीतिक और सामाजिक माहौल भी गरमा गया है। ग्रामीणों के बीच तरह-तरह की चर्चाएं हो रही हैं और लोग जांच के निष्कर्ष का इंतजार कर रहे हैं। अब सबकी नजरें पुलिस जांच पर टिकी हैं, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आखिर सच्चाई क्या है और आरोप कितने सही या गलत हैं। पुलिस का कहना है कि जल्द ही मामले का पूर्ण खुलासा किया जाएगा, जिससे स्थिति स्पष्ट हो सकेगी और न्याय सुनिश्चित किया जा सकेगा।

खैराबाद ब्लॉक की स्कूल चलो अभियान के तहत निकाली गई बाइक व स्कूटी रैली

● शिक्षा से बढ़कर कोई धरोहर नहीं- संतोष कुमार मिश्र

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

खैराबाद सीतापुर खैराबाद में परिषदीय स्कूलों में छात्र नामांकन बढ़ाने और शिक्षा के प्रति जन जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से स्कूल चलो अभियान के तहत एक विशाल एवं भव्य ऐतिहासिक रैली का आयोजन किया गया।इससे पूर्व कभी भी इस प्रकार की रैली का आयोजन नहीं किया गया था। जिसमें लगभग दो सौ बाइक और स्कूटी और चार पहिया वाहन शामिल थे।रैली का मुख्य उद्देश्य बच्चों का स्कूलों में शत प्रतिशत नामांकन करना है। बृहस्पतिवार को विकास खंड खैराबाद में खंड शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार मिश्रा व ब्लाक प्रमुख खैराबाद अजय विश्वकर्मा ने ग्रामीण क्षेत्रों में दस्तक देखकर ग्रामीणों को अपने बच्चों का स्कूल में दाखिला करने व नियमित उपस्थिति के लिए प्रेरित करने के लिए ब्लॉक खैराबाद के खंड शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार मिश्रा व ब्लाक प्रमुख खैराबाद अजय विश्वकर्मा ने कंपोजिट विद्यालय मुलायमपुर में मां सरस्वती का पूजन अर्चना कर व प्रार्थना की। कार्यक्रम का सफल संचालन नोडल ए आर पी संजीव पटेरिया ने किया जबकि ए आर पी शिवेन्द्र प्रताप सिंह, वीरेन्द्र कुमार सिंह, कार्यालय सहायक पंकज कुमार,रमेश रस्तोगी,पवन सिंह, मनीष पाल,सुधीर कुमार आदि ने पूरा सहयोग किया

खैराबाद खंड शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार मिश्रा व ब्लाक प्रमुख खैराबाद अजय विश्वकर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया साथ मे जूनियर शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष अपूर्व दीक्षित व प्रदेश प्रवक्ता मनीष पांडे भी उपस्थित थे। खंड शिक्षा अधिकारी खैराबाद ने बताया कि माह अप्रैल में बच्चों का शत प्रतिशत नामांकन किया जाना है उन्होंने शिक्षकों से कहा कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे विशेष रूप से आउट ऑफ स्कूल बच्चों को चिन्हित कर उनका दाखिला कराया जाना है। स्कूल चलो अभियान रैली का शुभारंभ कंपोजिट विद्यालय मुलायमपुर से हुआ। रैली नगर क्षेत्र के विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय मुबारकपुर, यूपीएस विष्णु नगर, निजामाबाद से होते हुए प्राथमिक विद्यालय सरवरपुर में पहुची जहाँ रैली का समापन किया गया। इस रैली में पवन कुमार सिंह अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ खैराबाद, नरेश मिश्रा अध्यक्ष जूनियर शिक्षक संघ खैराबाद, वरिष्ठ उपाध्यक्ष काज़िम हुसैन, बृजेंद्र प्रताप सिंह टी पी सिंह, हसन जमाल रिज़वी, एजाज़ अहमद, मुदित पाण्डेय, फ़ैजुल हसन, अंजू राजवंशी,डॉ अनुपम मिश्र, मंत्री जहीर आलम आलम, मंत्री अमित त्रिपाठी, विवेक पण्डित, सौरभ जायसवाल, पीर मोहम्मद, पूर्व अध्यक्ष सुशील गुप्ता, हुसैन, रुबीना, रश्मि शर्मा, रूबी वर्मा, ममता जायसवाल अन्नपूर्णा , चेतन, संतोष मिश्रा फरहाना मोहित पाण्डेय, शुभम अवस्थी, अमन, पंकज मिश्र, संजय, पूनम राठौर, सारिका, सरिता, अंजली चौहान, शून्य मिश्र, प्रदीप , अरविंद मिश्रा, सतीश, अनिल, रामकृष्ण, योगेन्द्र पांडेय आदि दो सैकड़ा शिक्षक/शिक्षिकाए मौजूद रहे। रैली का सभी विद्यालयों में पहुंचने पर बच्चों ने पुष्प वर्षा करके स्वागत किया तथा सूक्ष्म जलपान आदि की भी व्यवस्था की गई।

अखिलेश ने कार्यकर्ताओं को विधान सभा चुनाव की तैयारी के दिए निर्देश, कहा- भाजपा सरकार की साजिशों से रहें सावधान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने गुरुवार को पार्टी नेताओं विधान सभा चुनाव की तैयारियों में जुटने के निर्देश दिए। सपा प्रमुख ने कहा कि वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव में 2024 लोकसभा चुनाव से ज्यादा सावधानी बरतना है। भाजपा की साजिश से सावधान रहना है। जनता बदलाव चाहती है। कार्यकर्ता और नेता बूथ पर जाएं। लोगों को भाजपा सरकार की नाकामियों को बताएं।

पार्टी मुख्यालय पर हुई बैठक में सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा राजनीति के साथ छल करती है। लोकतंत्र के साथ धोखा करती है। सपा सरकार बनाने के लिए सभी को मिलकर सावधानी से काम करना है। विशेष गहन पुनरीक्षण में फर्जी हस्ताक्षर से वोट कटवाए जा रहे थे। चुनाव आयोग निष्क्रिय क्यों है? उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता जनता को पूर्व की सपा सरकार की उपलब्धियों और विकास कार्यों की भी जानकारी दें। इस दौरान नेता विरोधी दल माता प्रसाद पांडेय, पूर्व मंत्री राजेंद्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल आदि मौजूद रहे। वहीं सपा प्रमुख ने एक्स पर पोस्ट कर जाम लगने की समस्या और पुलिस की वसूली पर सवाल उठाते हुए लिखा कि जाते-जाते भाजपा सरकार हर तरह से पैसे कमाने में लगी है। ट्रैफिक पुलिस से सरेआम उगाही करवा रही भाजपा सरकार ने अब एआइ के नाम पर लूटने का नया तरीक़ा निकाला है। भाजपाइयों के लिए एआइ का मतलब 'आमदनी' है। जनता भाजपाई भ्रष्टाचार से उकता कर इस बार 'भाजपाई लाइसेंस' को हमेशा के लिए रद कर देगी। भाजपा जाए तो गाड़ी आगे बढ़ पाए।

भुलईपुर महोत्सव में शिक्षा, संस्कार और प्रतिभा का संगम, डीएम व जिला पंचायत अध्यक्ष ने बढ़ाया उत्साह

» भदोही के भुलईपुर विद्यालय में भव्य महोत्सव- बच्चों की प्रतिभा और शिक्षकों के समर्पण को मिला सम्मान

» डीएम शैलेष कुमार व अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी की मौजूदगी में भुलईपुर महोत्सव, 'स्कूल चलो अभियान' पर जोर

» शिक्षा और संस्कार का उत्सव बना भुलईपुर महोत्सव, उत्कृष्ट शिक्षकों व मेधावी छात्रों का सम्मानभुलईपुर महोत्सव- सर्वांगीण शिक्षा, खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से गूंजा विद्यालय परिसर

» कंपोजिट विद्यालय भुलईपुर में नवनिर्मित अतिरिक्त कक्ष, को-लोकेटेड आंगनबाड़ी का फीता काटकर किया शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भदोही 09 अप्रैल 2026:-जनपद भदोही क्षेत्र में आयोजित भव्य कम्पोजिट विद्यालय के प्रागण में "भुलईपुर महोत्सव" का आयोजन मुख्य अतिथि अनिरुद्ध त्रिपाठी एवं जिलाधिकारी शैलेष कुमार की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में शिक्षा, संस्कार, खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का समन्वित प्रदर्शन देखने को मिला, जिसने उपस्थित जनसमूह को विशेष रूप से प्रभावित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इसके उपरांत विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिनमें लोकनृत्य, समूहगान, नाटक एवं देशभक्ति पर आधारित प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। बच्चों की प्रतिभा, अनुशासन एवं आत्मविश्वास ने यह स्पष्ट किया कि विद्यालय स्तर पर सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी एवं जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने को-लोकेटेड आँगनबाड़ी का फीता काटकर शुभारम्भ किया। उन्होंने स्कूल प्रागण में निरीक्षण के दौरान लर्निंग बाय डूइंग प्रयोगशाला समग्र शिक्षा, एवं नवनिर्मित अतिरक्त कक्ष का उद्घाटन किया। निरीक्षण के दौरान सभी कक्षों का व्यवस्था, खेल-कूद प्रांगण, किचन गार्डेन, बागवानी, सुव्यवस्थित देख संतोष व्यक्त किया। कक्षा 1 व 2 में बच्चों को बैठने के लिए डेस्क ब्रेन्च की व्यवस्था कराने के लिए जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिया। इस अवसर पर बच्चों को साईकिल, पंखा, पुस्तक एवं अन्य पुरस्कार सामग्री भी वितरण किया गया।

मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व के समग्र विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि खेलकूद, पीटी, व्यायाम एवं सांस्कृतिक गतिविधियां बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऐसे आयोजन बच्चों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने शिक्षकों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन में ही बच्चे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं। उन्होंने कहा कि भूलईपुर विद्यालय जनपद के उत्कृष्ट विद्यालयों में से एक है। जिसकी पहचान प्रदेश स्तर पर भी है, यहाँ के प्रधानाध्यापक एवं उनकी पूरी टीम अथक प्रयास से बेहतर कार्य प्रदेश स्तर पर बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों द्वारा प्रतिभाग कर पुरस्कार प्राप्त कर रहे है। यह भी कहा कि गुरूओं का सम्मान सर्वोपरि है।

जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों को केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, अनुशासन और शारीरिक सुदृढ़ता की भी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विद्यालयों में खेलकूद, योग, व्यायाम एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना शासन की प्राथमिकताओं में शामिल है। जिलाधिकारी ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने जीवन में अनुशासन, परिश्रम और सकारात्मक सोच को अपनाकर सफलता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकते हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि विद्यालय में शिक्षा का स्तर इतना उत्कृष्ट है जितनी प्रसंशा की जाये कम है। जिलाधिकारी ने प्रधानाचार्य आशीष कुमार सिंह एवं उनके स्टॉफ की सराहना करते हुए कहा कि उनके समपर्ण एवं मेहनत से विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट उदाहरण बन रहा है। व्यक्ति के जीवन में शिक्षा आर्थिक, समाजिक स्थिति को सुधारती है। जिलाधिकारी शैलेष कुमार ने "स्कूल चलो अभियान" के अंतर्गत जनपदवासियों से अपील की कि वे अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजें। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है और कोई भी बच्चा इससे वंचित नहीं रहना चाहिए। अभिभावकों से बच्चों का नामांकन कराने और उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया, ताकि वे शिक्षा के साथ संस्कार, अनुशासन एवं समग्र विकास की दिशा में आगे बढ़ सकें।

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित अशोक कुमार गुप्ता, रामलाल सिंह यादव अध्यापकों एवं राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षक धीरक सिंह, संतोष सिंह, अरबिन्द पाल, ज्योति कुमारी, आशिष सिंह, अखिलेश यादव को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्हें अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। जिलाधिकारी एवं मुख्य अतिथि ने कहा कि ऐसे शिक्षक समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, जिनके प्रयासों से शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार हो रहा है।

विद्यालय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत पीटी एवं व्यायाम प्रदर्शन ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। सामूहिक तालमेल एवं अनुशासन के साथ किए गए इस प्रदर्शन ने बच्चों की मेहनत और प्रशिक्षण की झलक प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में ज्ञानवर्धक विषयों पर भी चर्चा की गई, जिसमें छात्रों को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक किया गया। अतिथियों ने बच्चों को प्रेरित किया कि वे अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें। आयोजकों द्वारा सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया। भुलईपुर महोत्सव न केवल मनोरंजन का माध्यम बना, बल्कि शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त मंच भी सिद्ध हुआ। इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि यदि बच्चों को उचित मार्गदर्शन एवं अवसर प्रदान किए जाएं, तो वे हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। इस अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शिवम पाण्डेय, खण्ड शिक्षा अधिकारी भदोही चन्द्रशेखर आजाद, ज्ञानपुर मनोज कुमार सिंह, संजय यादव डीसी, नवीन मिश्रा, अरबिन्द मौर्य, मानिक चन्द्र यादव, योगिता हेमकर, प्रतिमा सिंह व विद्यालय के अध्यापकगण एवं ग्राम प्रधान भारी संख्या में अभिभावक व बच्चें उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्रों की बड़ी खोज, मिर्जापुर में मिले प्रागैतिहासिक शैलचित्र

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के मानव शास्त्र विभाग छात्रों के द्वारा उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के विंध्य रेंज में की गई एक अहम खोज ने इतिहासकारों और पुरातत्वविदों का ध्यान आकर्षित किया है। यहां मिले प्रागैतिहासिक शैलचित्र न केवल प्राचीन मानव जीवन की झलक दिखाते हैं, बल्कि इनकी शैली फ्रांस और स्पेन जैसे यूरोपीय देशों की प्राचीन गुफा चित्रकला से भी मेल खाती नजर आती है। इससे यह संकेत मिलता है कि प्राचीन काल में विभिन्न सभ्यताओं के बीच सोच और अभिव्यक्ति में कुछ समानताएं रही होंगी।

बलुआ पत्थर की चट्टानों पर लाल रंग से बने चित्र

यह महत्वपूर्ण खोज उस समय सामने आई जब डीयू की शोध टीम क्षेत्र में भ्रमण के दौरान रास्ता भटक गई और अनजाने में इस स्थल तक पहुंच गई। काइमूर की पहाड़ियों में स्थित इस स्थान पर बलुआ पत्थर की चट्टानों पर लाल रंग से बने चित्र पाए गए हैं। इन चित्रों में मानव आकृतियां, जानवरों के चित्र और सामूहिक गतिविधियों के दृश्य स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

यूरोपीय देशों की प्राचीन गुफा चित्रकला से खाती है मेल

शोध टीम का नेतृत्व प्रो. मनोज कुमार सिंह और शोधकर्ता सुदेशना बिस्वास ने किया। प्रो. सिंह ने बताया कि इन चित्रों की शैली यूरोप के प्राचीन शैलचित्रों से मिलती-जुलती है, जिससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि उस समय की सभ्यताओं में कुछ सांस्कृतिक समानताएं रही होंगी। उन्होंने यह भी जोर दिया कि इन चित्रों पर वैज्ञानिक शोध बेहद जरूरी है, ताकि इनके वास्तविक काल और महत्व को समझा जा सके तथा संरक्षण के उपाय किए जा सकें।

विशेषज्ञों के अनुसार, इन शैलचित्रों का संबंध मध्यपाषाण काल (लगभग 10,000 से 14,000 वर्ष पूर्व) से हो सकता है। यह स्थल करीब 2.5 किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है, जहां कई चट्टानों पर चित्रों के समूह मौजूद हैं, जो उस समय के मानव जीवन, शिकार और सामाजिक गतिविधियों की कहानी बयां करते हैं। हालांकि, घने जंगल और दुर्गम क्षेत्र होने के कारण यहां व्यापक शोध करना चुनौतीपूर्ण है। साथ ही, प्राकृतिक क्षरण और मानवीय हस्तक्षेप से इन चित्रों को नुकसान पहुंचने का खतरा भी बना हुआ है। ऐसे में विशेषज्ञों ने इस ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण और विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता पर जोर दिया है।

पानी का कनेक्शन काटने की धमकी देकर ठगे जा रहे दिल्ली वाले, DJB ने लोगों को साइबर ठगों से किया सतर्क

नई दिल्ली। दिल्ली जल बोर्ड के नाम पर ठगी करने वाला गिरोह सक्रिय है। कभी बकाया बिल भुगतान नहीं करने पर कनेक्शन काटने की धमकी तो कभी बिल माफी योजना का लाभ को लेकर एसएमएस और काल करके लोगों से ठगी करने के कई मामले सामने आए हैं। कई लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है, उसके बाद भी इस तरह की शिकायतें आ रही हैं। इसे देखते हुए दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) ने उपभोक्ताओं को सतर्क किया है। पूर्व में गिरफ्तार कई साइबर ठगों ने पुलिस को पूछताछ में बताया था कि डीजेबी के पोर्टल से उपभोक्ताओं का नंबर व विवरण लेकर उपभोक्ताओं को अपना शिकार बनाते हैं। डीजेबी के राजस्व विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उपभोक्ताओं को मोबाइल काल या एसएमएस/वॉट्सएप संदेश भेजकर अपने आप को डीजेबी के प्रतिनिधि होने का झूठा दावा करने के मामले सामने आए हैं। लोगों को तत्काल भुगतान न करने पर पानी का कनेक्शन काटने की धमकी दी जा रही है। इस तरह के काल या एसएमएस/वाट्सएप संदेश डीजेबी द्वारा नहीं किए जा रहे हैं। इस काम के लिए किसी तीसरे पक्ष या व्यक्ति को भी अधिकृत नहीं किया गया है। उपभोक्ताओं से सभी संचार लिखित नोटिस या आधिकारिक डिजिटल चैनलों के माध्यम से ही किया जाता है। उपभोक्ताओं को उचित सत्यापन के बिना ऐसी संदिग्ध काल या संदेशों के आधार पर कोई भुगतान नहीं करना चाहिए।

यहां पर करें शिकायत इस तरह का काल या संदेश भेजने वाले से कोई व्यक्तिगत या वित्तीय विवरण साझा नहीं करने और तत्काल साइबर क्राइम हेल्पलाइन नंबर 1930 या www.cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करने की सलाह दी गई है। उपभोक्ता संबंधित जोनल राजस्व कार्यालय (जेडआरओ) या डीजेबी की हेल्पलाइन नंबर 1916 से भी इस तरह के काल या संदेश की सत्यता की जांच कर सकते हैं।

भारत को रूस ने दिया तगड़ा ऑफर, एलएनजी पर बंपर छूट देने को तैयार!

● पश्चिम एशिया में जारी युद्ध ने इस स्थिति को और भी ज्यादा गंभीर बना दिया। जहां पर खास करके स्टेट ऑफ हॉर्मोंस को लेकर जो तनाव बना उसकी वजह से एलएनजी के दाम बढ़ गए।

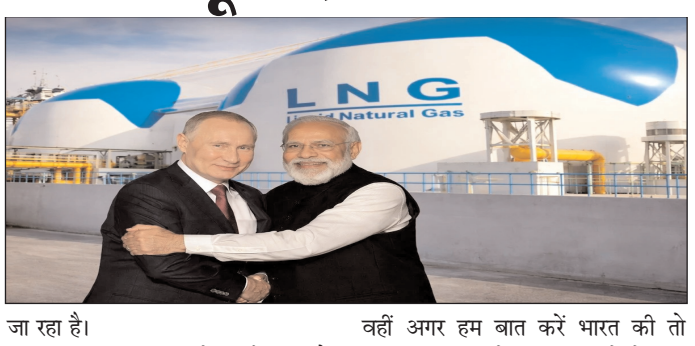

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेरिका और यान के बीच जारी जंग में भले ही दो हफ्तों के सीज फायर का ऐलान हो गया है लेकिन पिछले करीब 40 दिनों से चल रही इस जंग ने ग्लोबल मार्केट पे तगड़ा असर डाला है। जहां सबसे ज्यादा अगर कुछ प्रभावित हुआ है तो वो है दुनिया भर में तेल और गैस की कीमतें। इसी बीच भारत के लिए एक ऐसी खबर सामने आई है जो भारत के लिए इस वैश्विक संकट में राहत की खबर हो सकती है। खबर यह है कि भारत के लिए रूस 40त्न की छूट के साथ एलएनजी यानी लिक्विफाइड नेचुरल गैस ऑफर कर रहा है और आज के इस वीडियो में हम जानेंगे रूस के इसी बड़े ऑफर को डिटेल में। दरअसल, मिडिल ईस्ट के तनाव और दुनिया भर में गहराते हुए ऊर्जा संकट के बीच रूस ने एक ऐसा दांव चला जिसने वैश्विक राजनीति और ऊर्जा बाजार दोनों में ही हलचल मचा दी। खबर यह है कि रूस भारत समेत दक्षिण एशियाई देशों को अपने एलएनजी को 40त्न तक के सस्ते दाम पर देने को तैयार है। यह ऑफर ऐसे समय में आया है जब गैस की कीमतें लगातार तेजी से बढ़ रही हैं और कई देशों को सप्लाई की कमी का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिकी मीडिया ब्लूमबर्ग में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक रूस जिन एलएनजी शिपमेंट को इसके तहत पेश कर रहा है वो उसके उन प्रोजेक्ट से आता है जिन पर अमेरिका की तरफ से प्रतिबंध लगाए गए हैं। इन प्रोजेक्ट्स में आर्कटिक एलएजी 2 और पोटोंविया जैसे बड़े प्लांट शामिल है। जहां इन गैस शिपमेंट्स को सीधे रूस के बजाय चीन और रूस की कुछ कंपनियों के जरिए ऑफर किया जा रहा है।

इतना ही नहीं इन शिपमेंट्स के कागजों में यह भी दिखाया जा सकता है कि गैस ओमान या नाइजीरिया जैसे देशों से आई है जिससे इसके असली स्रोत को छुपाया जा सके और अमेरिका के लगाए गए प्रतिबंधों से बचा जा सके। यानी कि इस गैस की शिपमेंट में ऐसे कागज तैयार किए जाएंगे जिसमें रूस का नाम ही नहीं होगा। अब बात करते हैं कि आखिर रूस इतनी छूट पर क्यों अपने गैस को बेचना चाहता है? तो इसका सीधा जवाब यह है कि रूस इतनी बड़ी छूट इसलिए दे रहा है क्योंकि उस पर लगे हुए हैं प्रतिबंध और इन प्रतिबंधों के कारण उसे खरीदार ढूंढने में मुश्किल हो रही है। इसके अलावा हाल ही में रूस ने एलएनजी का उत्पादन भी बढ़ाया है लेकिन उसको इस वक्त पर्याप्त मात्रा में खरीदार नहीं मिल रहे हैं। ऐसे में रूस अपनी गैस को सस्ती कीमतों पर नए बाजार में बेचना चाहता है। खास करके एशिया में जहां ऊर्जा की मांग इस वक्त तेजी से बढ़ी हुई है। भारत और बांग्लादेश और साथ ही में कई दक्षिण एशियाई देश हैं जहां इस समय रूस की नजर टिकी हुई है। जिनकी ऊर्जा मांग इस समय बहुत ज्यादा हाई है।

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध ने इस स्थिति को और भी ज्यादा गंभीर बना दिया। जहां पर खास करके स्टेट ऑफ हॉर्मोंस को लेकर जो तनाव बना उसकी वजह से एलएनजी के दाम बढ़ गए। क़तर के बड़े एलएनजी प्लांट्स पर हमलों के कारण वैश्विक सप्लाई बुरी तरह प्रभावित हुई। क़तर से गैस की सप्लाई लगभग रुक सी गई है। जिससे भारत और बांग्लादेश जैसे देशों को महंगे विकल्प की ओर जाना पड़ा है। बांग्लादेश जो अपनी 60त्न एलएनजी क़तर से लेता था अब स्पॉट मार्केट से दोगुनी कीमतों पर गैस खरीदने को मजबूर हो गया है। वहीं अगर हम बात करें भारत की तो भारत भी क़तर से भारी मात्रा में नेचुरल गैस की खरीद करता है। और इसके साथ ही यूएई और सऊदी जैसे देशों से भी भारत गैस खरीदता है। लेकिन जब से हॉर्मोनस को लेकर तनाव बढ़ा है। सप्लाई चेन में भारी दिक्कत आई है और भारत को कहीं और ऑप्शन देखने पड़ रहे हैं। ऐसे में रूस की तरफ से 40त्न छूट में बिक रहा यह तेल भारत के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है।

लेकिन इसको लेकर भारत के सामने एक बड़ी दुविधा भी है। एक तरफ उसे सस्ते दाम पर गैस का विकल्प तो मिल रहा है जिससे भारत की ऊर्जा लागत कम हो सकती है और उद्योगों को भारी राहत मिल सकती है। दूसरी तरफ यह गैस अमेरिकी प्रतिबंधों वाले प्रोजेक्ट से आ रही है। जिससे भारत अमेरिकी संबंध पर असर पड़ सकता है। अब तक भारत ने ऐसे किसी भी प्रतिबंधित प्लांट से गैस खरीदने को मना कर रखा है ना ही भारत खरीद करता है। फिलहाल चीन ही एक ऐसा देश है जो रूस से इस तरह की प्रतिबंधित एलएजी को खरीद रहा है और वह भी गुप्त जहाजों के नेटवर्क के जरिए। अगर भारत भी इस रास्ते पर चलता है तो एशिया में रूस की पकड़ और भी ज्यादा मजबूत हो जाएगी और वैश्विक ऊर्जा संतुलन बदल सकता है। कुल मिलाकर रूस का यह कदम एक बड़ा रणनीतिक दांव है। यह भारत के लिए एक तरफ सस्ता और फायदेमंद विकल्प हो सकता है। तो वहीं दूसरी तरफ एक जोखिम भरा फैसला भी है क्योंकि रूस के ऊपर अमेरिका का प्रतिबंध लगा हुआ है और भारत अगर वहां से खरीदता है तो भारत पर भी कुछ प्रतिबंध आ सकते हैं। अब देखना यह होगा कि भारत इस ऑफर को कैसे लेता है और आगे क्या कदम उठाता है।

79 नंबर सीसीबरगांव चुनावी क्षेत्रो में लगभग 78.97 प्रतिषद

मतदान। 7 उम्मीदवारों के किस्मत ई वि एम में हुआ कैद।

असम धेमाजी। असम विधानसभा चुनाव 2026 का शाम 5 बजे के साथ ही सम्पन्न हुआ। 79 नंबर सीसीबरगांव चुनावी क्षेत्रो के 1820018 मतदाताओं ने 7 उम्मीदवारों को किस्मत ई वि एम में किया कैद। जिसमें भाजपा दल के उम्मीदवार जीवन गोगोई, विपक्ष एक्य राइजर दल के उम्मीदवार दुलाल बोरूवा, निर्दलीय उम्मीदवार नंदीगिरी भुइयां, प्रांजल बरा, रंजीत रय, लंकेश्वर दास, हरेन चांगमाई के भी किस्मत कैद है। लोगों में चर्चा हे नई चुनावी क्षेत्र में भाजपा , विपक्ष एक्य, एवं निर्दलीय एक उम्मीदवारों के बीच मैदानी क्षेत्र होगा। सुबद 7 बजे खराबी मौसम में भी लोगों ने मतदान केंद्रों में वोट डालने के लिए बीड़ करते हुए दिखाई दी। क्षेत्रो के सिलापथार डॉन बॉक्स स्कूल के साथ दो एक जगह ई वि एम के टेक्निकल गड़बड़ी दिखाई थी बाद में टिक कर फ़िर से वोट ग्रहण किया गया। खबर लिखते समय तक चुनावी क्षेत्रो में शांतिपूर्ण ढंग से मतदान हुआ। शाम के 5 बजे तक लगभग 78.97 प्रतिषद मतदान हुआ। वही जिले की 78 नंबर धेमाजी विधानसभा चुनाव क्षेत्र में 78.64 प्रतिषद,ओर 80 नंबर जोनाई विधानसभा चुनाव क्षेत्र में 79.41प्रतिषद मतदान हुआ है।

संतोष नगर विवाद में बड़ा एक्शन- प्रशासन का कड़ा संदेश, लोगों में जश्न का माहौल!

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मुम्बई संतोष नगर में चल रहे विवाद ने अब एक बेहद अहम और चौंकाने वाला मोड़ ले लिया है। लंबे समय से चर्चा में रहे इस मामले में आखिरकार प्रशासन ने सख्त कदम उठाते हुए आरोपी के घर पर पोकलैंड मशीन चला दी। आमतौर पर जहां बुलडोजर कार्रवाई देखने को मिलती है, वहीं इस बार देवा भाऊ की सरकार ने अलग रणनीति अपनाते हुए सीधे पोकलैंड से अवैध निर्माण को पूरी तरह जमींदोज कर दिया।

» बताया जा रहा है कि यह कार्रवाई अचानक नहीं, बल्कि लंबे समय से मिल रही शिकायतों और जांच के बाद की गई है।

» स्थानीय लोगों के अनुसार, आरोपी का नाम केवल इस विवाद तक सीमित नहीं था, बल्कि उस पर इलाके में ड्रग्स के अवैध कारोबार में शामिल होने के भी गंभीर आरोप लगते रहे हैं।

» कई निवासियों का कहना है कि वे काफी समय से इस कार्रवाई का इंतजार कर रहे थे, क्योंकि इलाके में लगातार डर और असुरक्षा का माहौल बना हुआ था।

जैसे ही प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और पोकलैंड मशीन ने कार्रवाई शुरू की, इलाके में बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। कुछ ही देर में पूरे क्षेत्र में हलचल मच गई और लोगों के चेहरों पर संतोष और राहत साफ दिखाई देने लगी।

खुशी और राहत का माहौल- कार्रवाई पूरी होते ही कई स्थानीय लोगों ने इसे न्याय की जीत बताया। लोगों का कहना है कि अब उन्हें अपने क्षेत्र में पहले से ज्यादा सुरक्षित महसूस हो रहा है। कुछ ने तो यहां तक कहा कि "अब गलत काम करने वालों को साफ संदेश मिल गया है कि कानून से ऊपर कोई नहीं है।"

प्रशासन का सख्त रुख- इस कार्रवाई को प्रशासन की 'जीरो टॉलरेंस' नीति का हिस्सा माना जा रहा है। अधिकारियों का स्पष्ट संदेश है कि अवैध गतिविधियों और कानून व्यवस्था को चुनौती देने वालों के खिलाफ इसी तरह कड़ी कार्रवाई जारी रहेगी।

बड़ा सवाल: क्या इस तरह की सख्त और तुरंत कार्रवाई ही समाज में कानून का डर बनाए रखने का सही तरीका है? क्या इससे अपराध पर लगाम लगेगी, या और भी व्यापक सुधारों की जरूरत है?

मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक आगरा मंडल चंद्रशेखर जी का टूण्डला निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

टूण्डला- मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक आगरा मंडल चंद्रशेखर ने प्रा. वि. नगला रतिया पर वार्षिकोत्सव व प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार पांडेय, खंड शिक्षा अधिकारी सुश्री ज्योति पाठक सहित अध्यापकगण उपस्थित रहे साथ ही मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक मंडल आगरा चंद्रशेखर का जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार पांडेय व खंड शिक्षा अधिकारी ज्योति पाठक ने ब्लॉक संसाधन केन्द्र टूण्डला पर पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया गया। AD बेसिक चंद्रशेखर जी ने BSA, BEO, SRGs, ARPS व संकुलों के साथ बैठक कर नवीन नामांकन बढाने को नवीन अनुभवों पर आधारित सुझावों को सम्मिलित किया। साथ ही पाठ्यपुस्तक बांसुरी पर अपने विचार रखे। उन्होंने अध्यापकों के मनोबल को बढाने हेतु स्त्रक्ष व ARP को मिलकर कार्य करने को निर्देशित किया। उन्होंने बीआरसी टूण्डला का निरीक्षण किया और अपने रचनात्मक और गुणवत्ता पूर्ण सुझाव ब निर्देश दिया ।उन्होंने बताया कि अध्यापक विद्यार्थियों के साथ रचनात्मक कार्य (यथा पेंटिंग, म्यूजिक) कर भी बच्चे की अंतर्निहित क्षमताओं का प्रस्फुटन कराने में सक्षम होंगे। एडी बेसिक चंद्रशेखर जी ने जिला फिरोजाबाद के प्रदर्शन पर सभी को बधाई दी। बेसिक शिक्षा अधिकारी आशीष कुमार पांडेय ने किये गये विभागीय प्रयासों और प्रतिफल के रूप में प्राप्त परिणामों के

बारे में विस्तार से अवगत कराया। अंत में खंड शिक्षा अधिकारी ज्योति पाठक द्वारा नवीन नामांकन, शारदा कार्यक्रम की उपलब्धियों के बारे में अवगत कराया ।बैठक के दौरान सुभाष चंद्र, नरेश बाबू, जया शर्मा, डॉ जितेन्द्र दुबे, महशर जहां, सतेन्द्र बाबू, रणजीत सिंह शिखा सहित समस्त संकुल उपस्थित रहे।

आगामी जनगणना की तैयारी को लेकर एम0जी0 इंटर कॉलेज में एक महत्वपूर्ण समीक्षा अधिकारी की अध्यक्षता मे आयोजित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

फिरोज़ाबाद- आगामी जनगणना की तैयारी को लेकर एम0जी0 इंटर कॉलेज में एक महत्वपूर्ण समीक्षा आयोजित की गई, समीक्षा का नेतृत्व मुख्य विकास अधिकारी शत्रोहन वैश्य एवं अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे मोहनलाल गुप्ता द्वारा किया गया, समीक्षा के दौरान जनगणना कार्य को सुचारू और त्रुटिहीन ढंग से संपन्न कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए, समीक्षा के दौरान जानकारी दी गई, कि जनगणना कार्य में तैनात होने वाले प्रगणकों और सुपरवाइजरों के लिए विस्तृत प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएंगे, यह प्रशिक्षण 16 अप्रैल से 30 अप्रैल के माध्यम चलेगा, प्रशिक्षण प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से सायंकाल 5 बजे तक संचालित होगा, प्रशिक्षण के लिए एम0जी0 इंटर कॉलेज के 45 कमरों को आरक्षित किया गया है, इस प्रशिक्षण में लगभग 6000 प्रगणक एवं सुपरवाइजर भाग लेंगे, प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए दो

मुख्य मास्टर ट्रेनर एवं 88 ट्रेनरों की तैनाती की गई है, समस्त गतिविधियों की निगरानी और समन्वय के लिए एम0जी0 इंटर कॉलेज परिसर में ही एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है।

मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देश दिए हैं कि जनगणना एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, इसमें किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाए, समीक्षा के दौरान नोडल अधिकारी जनगणना के0एम0 सिंह एवं डीएसटीओ एम0पी0सिंह, सहायक जिला प्रभारी जनगणना सनी कुमार, प्रिंसिपल सरिता यादव, मास्टर ट्रेनर अश्वनी जैन, व योगेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहें।

हाई टेंशन तार के चिंगारी से गेहूं के खेत में लगी आग

चुनार, मीरजापुर। तहसील क्षेत्र के मुहल्ला बहरामगंज मे खेत से होकर गुजरे हाईटेंशन तार शार्ट करने से निकली चिंगारी से चौतीस विस्वा गेंहू का फसल जलकर खाक हो गई। एलआईसी फिडर से बहरामगंज होते हुए जगदीशपुर उर्फ टम्मलगंज तक बिजली विभाग के द्वारा एचटी लाइन ले जाया गया है शुक्रवार को दोपहर तेज हवा के चलते तार शार्ट करने से निकली चिंगारी गेंहू के खेत मे जा गिरी जिससे काश्तकार रामजी यादव पुत्र स्व0 शोभनाथ, का सत्रह विस्वा व दयाराम यादव,मयाराम यादव, विजय बहादुर यादव पुत्रगण स्व0 मनबोध का सत्रह विस्वा गेंहू का फसल जलकर खाक हो गया मुहल्ले के लोगों ने नाले के पानी से आगपर काबू पा लिया और आग को आगे बढने से रोक लिया। तत्पश्चात नगरपालिका परिषद द्वारा टैंकर से पानी उपलब्ध कराया गया आग बुझने के बाद दमकल मौके पर पहुंच पायी। यदि दमकल के सहारे लोग रहते तो सैकडो विघा फसल जलकर नष्ट हो जाता।

ब्रदर इन' होटल कांड- फरार आरोपी उज्जैन से गिरफ्तार, पुलिस ने भेजा जेल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

तिलहर/शाहजहांपुर। कोतवाली क्षेत्र के नेशनल हाईवे स्थित नगरिया मोड़ पर हुए चर्चित 'द ब्रदर इन' होटल कांड में फरार चल रहे एक और आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को मध्य प्रदेश के उज्जैन रेलवे स्टेशन से मुखबिर की सूचना पर दबोचा गया। पुलिस के अनुसार, 19 दिसंबर की रात भाजपा नेता पंकज सिंह के होटल 'द ब्रदर इन' में मारपीट और तोड़फोड़ की घटना हुई थी। इस मामले में होटल संचालक इंद्रजीत सिंह (पंकज सिंह के भाई) की तहरीर पर विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। मामले में अक्षय कदम, योगेश कदम, ऋषभ तिवारी, आयुष मराठा और शिवांश मिश्रा को नामजद किया गया था। पुलिस ने 22 दिसंबर को योगेश कदम और आयुष मराठा को गिरफ्तार कर पहले ही जेल भेज दिया था, जबकि अन्य आरोपी फरार चल रहे थे। पुलिस टीम ने सर्विलांस और तकनीकी साक्ष्यों के आधार

पर लगातार दबिश दी। इसी क्रम में 7 फरवरी 2026 को 25 हजार रुपये के इनामी आरोपी अक्षय कदम को महाराष्ट्र के सतारा जनपद के कराड बस स्टैंड से गिरफ्तार किया गया था।

अब 8 अप्रैल, बुधवार शाम करीब 5 बजे पुलिस ने उज्जैन रेलवे स्टेशन से फरार आरोपी शिवांश मिश्रा पुत्र सर्वेश (निवासी फेस-1 सिटी पार्क कॉलोनी, थाना रोजा) को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तारी टीम में प्रभारी निरीक्षक जुगल किशोर पाल, अपराध निरीक्षक सुनील कुमार यादव, उप निरीक्षक अनुज चौधरी, कांस्टेबल धर्मेंद्र सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे।

डीयू के इंद्रप्रस्थ महिला कॉलेज में मासिक धर्म स्वास्थ्य पर सर्टिफिकेट कोर्स शुरू, जागरूकता को मिलेगा बढ़ावा

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय (आइपीसीडब्ल्यू) ने मासिक धर्म स्वास्थ्य और स्वच्छता पर जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक विशेष सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया है। दक्षिण एशिया के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय के सहयोग से एम्पावर फ्लो- अ सर्टिफिकेट कोर्स फार मेंस्ट्रुअल हेल्थ एंड हाइजीन स्पॉटलाइट रेड नामक यह पाठ्यक्रम शुरू किया गया है। कॉलेज प्रशासन के अनुसार, यह कोर्स एक संरचित शैक्षणिक पहल है, जिसका उद्देश्य मासिक धर्म से जुड़े मिथकों और सामाजिक कलंक को कम करना है। इसमें स्वास्थ्य शिक्षा, जेंडर स्टडीज और सामाजिक जागरूकता को शामिल किया गया है, ताकि छात्र-छात्राएं इस विषय पर सही जानकारी हासिल कर सकें और समाज में सकारात्मक संवाद को बढ़ावा दे सकें। कार्यक्रम में कई प्रमुख शिक्षाविद और विशेषज्ञ शामिल हुए। इस अवसर पर नयना सहस्रबुद्धे मुख्य अतिथि रहीं, जबकि जायस पोएन और हुमा मसूद ने अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का नेतृत्व कॉलेज की प्राचार्य पूनम कुमरिया ने किया और विभिन्न विभागों के शिक्षकों ने समन्वय किया।

एनएच-31 से बभनौली तक प्रस्तावित बाईपास का डीएम ने किया स्थलीय निरीक्षण, गुणवत्ता व समयसीमा पर सख्ती के निर्देश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलिया। जनपद में प्रस्तावित एनएच-31 से एनएच-107 बभनौली तक बनने वाले बाईपास कॉरिडोर को लेकर प्रशासन अब पूरी तरह सक्रिय नजर आ रहा है। गुरुवार को जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने स्वयं मौके पर पहुंचकर निर्माण कार्य का स्थलीय निरीक्षण किया और प्रगति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने वैन से पूरे प्रस्तावित मार्ग का भ्रमण करते हुए निर्माण की गुणवत्ता, कार्य की गति तथा संभावित चुनौतियों का आकलन किया।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी विशेष रूप से बलिया-बांसडीह राज्य मार्ग से जुड़े सुरहाताल क्षेत्र पहुंचे, जहां निर्माण कार्य को लेकर उन्होंने अतिरिक्त सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से स्पष्ट कहा कि यह क्षेत्र पर्यावरणीय और भौगोलिक दृष्टि से संवेदनशील है, इसलिए यहां किसी भी प्रकार की जल्दबाजी या लापरवाही गंभीर परिणाम ला सकती है। ऐसे में निर्माण कार्य पूरी तकनीकी सावधानी और मानकों के अनुरूप ही किया जाए। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था के अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि बाईपास परियोजना जिले के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और इससे शहर में यातायात का दबाव काफी हद तक कम होगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में शहर के अंदर भारी वाहनों के आवागमन से जाम की समस्या बनी रहती है, जिससे आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ता है। बाईपास बनने के बाद भारी वाहन शहर के बाहर से ही निकल सकेंगे, जिससे यातायात व्यवस्था सुचारु होगी और लोगों को राहत मिलेगी।

उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर विशेष जोर देते हुए कहा कि किसी भी स्थिति में मानकों से समझौता नहीं किया जाएगा। यदि कहीं भी लापरवाही या घटिया निर्माण सामग्री का उपयोग पाया गया, तो संबंधित अधिकारियों और कार्यदायी संस्था के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने कार्य को निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए और कहा कि नियमित रूप से इसकी समीक्षा की जाएगी। जिलाधिकारी ने यह भी कहा कि परियोजना के दौरान स्थानीय लोगों की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाए। निर्माण कार्य के चलते आमजन को अनावश्यक असुविधा न हो, इसके लिए

उचित वैकल्पिक मार्ग, सुरक्षा इंतजाम और सूचना व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

निरीक्षण के दौरान एसडीएम सदर तिमराज सिंह, अधिशासी अभियंता सिंचाई विभाग, डीएफओ सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने जिलाधिकारी को अब तक की प्रगति और आगे की कार्ययोजना की जानकारी दी। बता दें कि यह बाईपास कॉरिडोर बलिया शहर के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इसके पूरा होने से न केवल यातायात व्यवस्था बेहतर होगी, बल्कि क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा। प्रशासन की सक्रियता से अब यह उम्मीद जताई जा रही है कि परियोजना तय समयसीमा में पूरी होगी और जनता को जल्द ही इसका लाभ मिलेगा।

कोलकाता का मौसम कोलकाता में 'येलो अलर्ट', क्या बारिश बनेगी विलेन? डरा रही ताजा वेदर रिपोर्ट

» केकेआर और एलएसजी के बीच ईडन गार्डन्स पर भिड़ंत

» दोनों टीमें प्वाइंट्स टेबल के निचले स्थानों पर काबिज

» केकेआर के लिए खेलेंगे नरेन, वरुण पर सस्पेंस बरकरार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। कोलकाता नाइटराइडर्स और लखनऊ सुपरजायंट्स के बीच गुरुवार को ईडन गार्डन्स पर मुकाबला खेला जाना है। हालांकि, मौसम के कारण सस्पेंस बना हुआ है कि मुकाबला पूरा हो पाएगा या नहीं दरअसल, कोलकाता में %येलो अलर्ट% है और सुबह यहां तेज बारिश भी हुई। कोलकाता में आंधी की भी उम्मीद है, जिसके चलते येलो अलर्ट जारी किया गया है। मगर खबर है कि मैच के समय तक स्थितियां ठीक होंगी और फैंस को पूरा एक?शन देखने को मिल सकता है।

मौसम की डिटेल्स एक्यूवेदर ने संकेत दिए है कि टॉस के समय तक बारिश रुक जाएगी। मैच के दौरान बादल घिरे रहने की संभावना है। विशेषज्ञों की मानें तो 40 ओवर का पूरा मुकाबला देखने को मिलेगा। मैच के समय तापमान 24 से 27 डिग्री सेलसियस तक रहने की उम्मीद है। यहां हवा 11 किमी प्रति घंटे की गति से चल सकती है। इसका मतलब है कि शुरूआत में तेज गेंदबाजों को फायदा मिल सकता है।

ओस की बड़ी भूमिका यहां प्रमुख पहलु उमस के स्तर का हो सकता है, जो कि 79 प्रतिशत तक रहने की उम्मीद है। इसका मतलब है कि ईडन गार्डन्स पर देर शाम ओस पड़ सकती है। ओस के कारण गेंदबाजों को गेंद पर ग्रिप करना मुश्किल हो जाएगा और बल्लेबाजों की मौज हो जाएगी।

मैच में हो सकती है देरी

भले ही मैच के समय के दौरान बारिश की संभावना नहीं हो, लेकिन सुबह की बारिश के कारण मैदान की आउटफील्ड का सूखना मुश्किल है। ग्राउंड स्टाफ को खेलने के लिए स्थितियों को सुधारने में समय लग सकता है, जिसके चलते मैच शुरू होने में देरी भी लग सकती है।

येलो अलर्ट क्या होता है

येलो अलर्ट को सरल शब्दों में समझा जाएं तो खराब मौसम को देखते हुए सावधान रहने की जरूरत होती है। येलो अलर्ट तब जारी किया जाता है जब तेज बारिश, आंधी-तूफान और जोरदार हवा चलने के संकेत हो।